UNIVERSAL LIBRARY
OU_186303
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—24—4-4-69—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 S69S Accession No. P.G. H19 76

Author सोमेश्वर सिंह, कुँवर

Title सरोज

This book should be returned on or before the date last marked below.

सरोज

लेखक

कुँवर सोमेश्वरसिंह, बी० ए०, एल-एल० बी०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

इलाहाबाद

मूल्य २)

मुद्रक – श्री प्रेम चंद मेहरा, न्यू इंरा प्रेस, प्रयाग

प्रिय पुत्री मालती को
सस्नेह

–सोमेश्वरसिंह

दो शब्द

श्री कुँवर सोमेश्वरसिंहजी का "सरोज" उनके मानस की श्री-शोभा का प्रतीक है। उसकी प्रत्येक पंखड़ी में तरुण कवि हृदय की भावना का सौरभ एवं रुचि वैचित्र्य की छटा है; उसके कोष में कवि के सुख दुःखों का मधु, अन्तर में उसकी अनुभूतियों का सौन्दर्य तथा विकास है। प्रस्तुत संग्रह में अनेक विषयों पर अनेक प्रकार की रचनाएँ हैं, जिनके स्वरों में कवि हृदय की करुणा, ममता, उदारता तथा आदर्शवादिता झंकृत हो उठती है। यत्र-तत्र उनमें युग का विषाद, कृषकों, श्रमिकों के प्रति सहानुभूति, जीवन-संघर्ष की प्रतिध्वनियाँ तथा नवीन विचारों की अनुगूँज भी सुनाई पड़ती है।

कवि की भाषा उसके हृदय के समान ही सरल-सुगम तथा उसकी शैली अत्यन्त सुबोध तथा अभिधाप्रधान है।

कुछ गीत अत्यन्त मधुर तथा भावपूर्ण हैं। यथा—

तुम भी चलो, मैं भी चलूँ!
संघर्ष पथ पर हो रहा है
जो यहाँ वह व्यर्थ है,
संकेत प्रभु से जो मिले
उसका यही तो अर्थ है,
तुम भी रहो, मैं भी रहूँ!
... ...
तुम भी सहो, मैं भी सहूँ।

अथवा—

था कितना सुन्दर वह सपना
अभिशाप हुआ अपना जगना!
शीतल कर अपनी ज्वाला को
था दीप शलभ को चूम रहा
लेकर स्वाती जल, चातक को
खोजता हुआ घन घूम रहा!
... ...

दो

जलधारा थी, जा स्वयं निकट
तृष्णाकुल मृग को पिला रही
प्रत्येक बुभुक्षित को वसुधा
थी पूछ पूछकर खिला रही।

इत्यादि

इस प्रकार की अनेक आशा-विश्वास, शोभा-उल्लासपूर्ण भावनाएँ कवि के कल्पनाशील गीतों में अभिव्यक्त हुई हैं।

कवि तरुण है, अध्ययनशील तथा अध्यवसायी है। मुझे विश्वास है, भविष्य में उसकी लेखनी से और भी उत्कृष्ट भाव-विदग्ध तथा ओजस्विनी रचनाएँ हिन्दी पाठकों को सुलभ हो सकेंगी। मेरी शुभ कामनाएँ कवि के साथ हैं।

—सुमित्रानन्दन पंत

——

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—है कौन सामने आया ?	...	...	१
२—कुछ भूल गया, कुछ याद भी है	...	...	२
३—जो बीत गई, वह बीत गई	...	...	४
४—मैं किसको सुना रहा हूँ	...	...	५
५—आया हूँ यहाँ अकेला	...	...	६
६—मैं नहीं जान वह पाया	...	...	७
७—प्रिय गीत न होगा मेरा	...	...	८
८—तुम भी चलो, मैं भी चलूँ	...	...	१०
९—है कौन मुझे बहलाता ?	...	...	११
१०—आँसू के कण यह क्या हैं ?	...	...	१३
११—लौटा क्यों अतिथि हमारा ?	...	...	१५
१२—था कितना सुन्दर वह सपना	...	...	१६
१३—बाजार	...	...	१७
१४—है कितने दिन की मस्ती	...	...	१९
१५—तुम आज भी न आये	...	...	२०
१६—जो रोक सके, वह रोक ले	...	...	२२
१७—मैं आज न जाने दूँगी प्रीतम	...	...	२३
१८—सान्त्वना दूँ मैं अब किसको ?	...	...	२५
१९—जीवन निज पथ पर चलता है	...	...	२६
२०—पीते-पीते निशि बीती	...	...	२७
२१—है रुकने का कुछ काम नहीं	...	...	२९
२२—मैं राह देखती कब से प्रीतम !	...	...	३०
२३—नहीं कर तू इसकी परवाह	...	...	३१
२४—आता होगा, आता होगा	...	...	३२
२५—किसी की याद आती है	...	...	३३
२६—भर आते ये मेरे लोचन	...	...	३५
२७—कहनेवालों को कहने दो	...	...	३६

विषय			पृष्ठ
२८—जल रहे, सब जल रहे हैं	...	...	३८
२९—अपना वश कब तक चलता है...		...	४०
३०—धारे ललाट पर अतिशय	...	...	४१
३१—असहाय मेरी कल्पना	...	...	४३
३२—रुक नहीं पथिक, तू देर न कर...		...	४४
३३—है बान वही, है शान वही	...	...	४५
३४—हम तुम दूर दूर होंगे	...	...	४६
३५—मृत्यु शैया	...	...	४८
३६—खोकर अपने को भी तुमको	..	...	५०
३७—कोई न सुनेगा तेरी	...	...	५१
३८—मेरे सिवा कोई नहीं	...	...	५३
३९—असमंजस	...	...	५४
४०—आओ, जीवन-धन आओ	...	...	५५
४१—है कैसी आँखमिचौनी	...	...	५६
४२—अब भी	...	...	५७
४३—किसने देखा, किसने जाना	...	...	५८
४४—हूँ मैं न कभी भी एकाकी	...	...	५९
४५—यह भी नहीं, वह भी नहीं	...	...	६०
४६—फूलोंवाली	...	...	६१
४७—बाल विधवा के प्रति	...	...	६२
४८—अलि, एक कली से प्यार न कर		...	६४
४९—हम क्यों आते, हम क्यों जाते ?		...	६५
५०—देखा किया, देखा किया	...	...	६६
५१—मैं भुला दूँगा तुम्हें तब	...	...	६७
५२—विह्वल हैं देख उन्हें सब जो	...	...	६८
५३—तुम भी न गा उठना कभी	...	...	६९
५४—मानव अभी तक है वही	...	...	७०
५५—निठुर कैसे न आओगे	...	...	७१
५६—कोई नहीं, कोई नहीं	...	...	७३
५७—किसान	...	..	७५
५८—शुचि स्नेह मिलता है जिसे	...	...	७७
५९—सपने सा बीत गया जीवन		...	७९
६०—अँधेरे पथ पर जब अज्ञात	...	...	८०

विषय			पृष्ठ
६१—कवि, यह तेरा संसार नहीं	...	...	८१
६२—हम देखने आते नहीं	...	...	८२
६३—लगती है बाजी नित्य नई	...	...	८३
६४—मेरे लिए, मेरे लिए	...	...	८५
६५—सुख में मतवाला क्या जाने	...	...	८६
६६—होता अच्छा अंजाम नहीं	...	...	८७
६७—कुछ भी कहूँ, कुछ भी करूँ	...	...	८८
६८—है इन राखों की ढेरी में	...	...	८९
६९—देखा	...	...	९०
७०—पलभर जाने दो भूल आज	...	...	९२
७१—हैं ये ही कवि के करुण गान	...	...	९३
७२—न रोके रुक सकता उद्गार	...	...	९४
७३—जब	...	...	९६
७४—ध्यान था मुझको नहीं	...	...	९८
७५—भूल जाऊँगा तुम्हें मैं	...	...	९९
७६—ऊषा	...	...	१०१
७७—तसवीर	...	...	१०३
७८—मेरे मृदु स्वप्न जगाते	...	...	१०५
७९—दो दिन का यह वैभव है	...	...	१०७
८०—इस छोटे से जीवन की	...	...	१०८
८१—मधुर स्मृति अब तुम न आना		...	१०९
८२—है उन स्वप्नों की छाया	...	...	१११
८३—है बँधा परिस्थितियों से	...	...	११२
८४—ऐसी अँधेरी रात में	...	...	११३
८५—सभी के तो दिन फिरते हैं	...	...	११४
८६—कैसा प्रभात है आया	...	...	११५
८७—मुझे पत्थर पिघलाना है	...	...	११६
८८—मत इतना मुझे उठाओ	...	...	११७
८९—बना मैं एक तमाशा हूँ	...	...	११८
९०—लिखा क्या किसकी किस्मत में		...	११९
९१—लुट गया जिसने लुटाया	...	...	१२०

——

कुँवर सोमेश्वरसिंह, एम० एल० ए०

है कौन सामने आया

कौन है आया

बतलाने को सन्देश हमें
मानवता की लाचारी का
या कठिन परीक्षा लेने को
धारण कर रूप भिखारी का

है कौन सामने आया
कौन है आया

हिम के आतप से पीड़ित हो
वह वस्त्र-हीन कम्पित-काया
अति जर्जर-तन रोगी बन कर
हमसे कुछ कहने अकुलाया

है कौन सामने आया
कौन है आया

बन कर विधवा ले मूक व्यथा
जीती है जो मर जाने को
हो सकती नियति निठुर कितनी
हमको यह याद दिलाने को

है कौन सामने आया
कौन है आया

दो दिन डाली पर हँस सहसा
पद-मर्दित कोमल कलिका बन
यह इंगित सा करता हमको
है कितना क्षणभङ्गुर जीवन

है कौन सामने आया
कौन है आया

कुछ भूल गया कुछ याद भी है

था मेरा साथ दिया किसने
औ कौन छोड़कर गया किधर
मैं चलने में ही मस्त रहा
जीवन के इस दुर्गम पथ पर

कब गिरा और कब उठा कहाँ
कुछ भूल गया कुछ याद भी है

जब पथ के अगणित क्लेशों से
था घबरा उठता अपना मन
था अन्धकार होता सन्मुख
घिरते थे विपदाओं के घन

मुझको प्रकाश कब मिला कहाँ
कुछ भूल गया कुछ याद भी है

चलने वाले तो थे थोड़े
थे बहुत देखते इधर-उधर
पथ पर जो दर्शक मिले मुझे
थे व्रण-पूरित इन चरणों पर

हँसते रोते सब जहाँ तहाँ
कुछ भूल गया कुछ याद भी है

विश्राम-विकल होती थी जब
श्रम से थक यह अपनी काया
तरु जो मिलते थे उनमें से
कितनों ने दी शीतल छाया

कितने थे ठूठे खड़े वहाँ
कुछ भूल गया कुछ याद भी है

था धैर्य मिला मुझको सम्बल
था जिसे न सकता वज्र हिला
विश्वास प्रदर्शक था पथ का
पाथेय प्रेम था मुझे मिला

कब कौन किन्तु गिर गया कहाँ
कुछ भूल गया कुछ याद भी है

आदेश सभी मैं भूल गया
है अपना मस्तक झुका हुआ
पथ के ऐसे स्थल पर हूँ मैं
असहाय आज अब रुका हुआ

जाना है रुकना या कि यहाँ
कुछ भूल गया कुछ याद भी है

जो बीत गई वह बीत गई

अपने जीवन के मधुमय क्षण
सरिता के सँग में बहते कण
फिर लौट नहीं हैं आ सकते
मुरझाये हैं जो मञ्जु सुमन
जो बीत गई वह बीत गई

सावन तो फिर से आयेगा
मृदु मोर मुदित मन गायेगा
पर वह घन जो है बरस चुका
रस मय बूँदे न गिरायेगा
जो बीत गई वह बीत गई

सज धज कर रजनी आती है
मोती मृदु बरसा जाती है
अपने अमूल्य उन रत्नों को
फिर से वह किन्तु न पाती है
जो बीत गई वह बीत गई

विकसित वसन्त फिर आयेगा
नित नई कली विकसायेगा
मुरझाई कलिकाओं को पर
वह फिर से नहीं हँसायेगा
जो बीत गई वह बीत गई

आशाओं के नित नये नये
अंकुर उठते ही जायेंगे
पर लुटी हुई अभिलाषा को
हम फिर से कहाँ बसायेंगे
जो बीत गई वह बीत गई

मैं किसको सुना रहा हूँ

कलिका के ढिग नित जाकर
मधु पर मँडरा मँडरा कर
सोचा न भ्रमर तूने क्यों
निज विपुल व्यथा को गाकर
मैं किसको सुना रहा हूँ

निर्मम उस दीप शिखा पर
आ गिरा शलभ पागल बन
तुझको यह ध्यान न आया
अपना अमूल्य यह जीवन
मैं किस पर मिटा रहा हूँ

शशि की अतुलित आभा से
जागृत अतृप्त तृष्णा कर
तूने चकोर कब सोचा
किस परम निपट निष्ठुर पर
मैं निज को लुटा रहा हूँ

अति तीव्र प्यास को तेरी
पावस भी बुझा न पाया
चातक तूने न विचारा
किस एक बूँद की माया--
में पागल कहा रहा हूँ

है मौन चाहता होना
अब विह्वल कवि का स्वर भी
यह सोच कि अब तक निश्चय
पिघला होता पत्थर भी
मैं किसको सुना रहा हूँ

आया हूँ यहाँ अकेला

मैं छोड़ साथ का मेला

थे चलते-चलते पाँवों में
जिनके कुछ छाले पड़े हुए
वे लौट पड़े, लख जो सम्मुख
थे पथ पर काँटे खड़े हुए

आया हूँ यहाँ अकेला
मैं छोड़ साथ का मेला

सो गये बहुत से थे पथ पर
मैं जिनकी नींद भगा न सका
थे बहुत जाग फिर सो जाते
उनको फिर कभी जगा न सका

आया हूँ यहाँ अकेला
मैं छोड़ साथ का मेला

बहुतों की तो पहिले से ही
इच्छा थी वापस जाने की
हो गईं निरर्थक चेष्टायें
उनको सब सँग में लाने की

आया हूँ यहाँ अकेला
मैं छोड़ साथ का मेला

है आज हृदय मेरा विह्वल
हूँ सोच यही मैं पछताता
आया क्यों यहाँ अकेला
मैं सब को लेकर आता

आया हूँ यहाँ अकेला
मैं छोड़ साथ का मेला

मैं नहीं जान यह पाया

आतुर आँखों में रहतीं
अविरल आँसू की लड़ियाँ
हैं छिपी मिलन के पल में
अगणित वियोग की घड़ियाँ

मैं नहीं जान यह पाया

आशा के अंकुर उर में
उठते हैं जो मन भाये
नैराश्य-अनल को भी ये
हैं आमन्त्रित कर आये

मैं नहीं जान यह पाया

हँसते हँसते ही होगा
सोचा था नित्य सवेरा
थी खिली चाँदनी ऐसी
आयेगा कभी अँधेरा

मैं नहीं जान यह पाया

हो रिक्त कभी सकती है
मधुपूरित मधुशाला भी
रहती मधु में अन्तर्हित
है दबी हुई ज्वाला भी

मैं नहीं जान यह पाया

प्रिय गीत न होगा मेरा

होगे तुम रंगे हुये जब
मृदुदीप शिखा के रंग में
जलता होगा मेरा उर
असहाय शलभ के संग में
प्रिय गीत न होगा मेरा

तुमको नित मुग्ध करेगी
ज्योत्स्ना उज्ज्वल पुलकित-तन
प्रिय है चकोर का मुझको
पर अकुलाया पागलपन
प्रिय गीत न होगा मेरा

विकसित वसन्त-वैभव में
प्रिय होगा तुमको रहना
पतझड़ की करुण कहानी
लेकिन है मुझको कहना
प्रिय गीत न होगा मेरा

हो बँधे हुये पुष्पों के
तुम रूप-राशि-पाशों में
विछिन्न कली ने बाँधा
तुमको निज उच्छ्वासों में
प्रिय गीत न होगा मेरा

पावस की रिमझिम तुमको
लगती है सुखद सुहानी
आँखों के पावस की पर
कहनी है मुझे कहानी
प्रिय गीत न होगा मेरा।

तुम शस्य श्यामला भू पर
हँसते होगे जब प्रतिपल
मैं मरुस्थली की ज्वाला
में जलता हूँगा विह्वल
प्रिय गीत न होगा मेरा

अनुराग राग मृदु होंगे
तुम चिरसुहागिनी के जब
मैं विपुल व्यथा विधवा की
बन कर रोता हूँगा तब
प्रिय गीत न होगा मेरा

स्वागत सदैव पाते तुम
अरमानों की बस्ती में
मेरा सङ्गीत छिपा है
उर की उजड़ी हस्ती में
प्रिय गीत न होगा मेरा

तुम भी चलो मैं भी चलूँ

संघर्ष पथ पर जो यहाँ
है हो रहा वह व्यर्थ है
संकेत प्रभु से जो मिले
सबका यही तो अर्थ है

तुम भी रहो मैं भी रहूँ
तुम भी चलो मैं भी चलूँ

सुख दुःख सारे बाँट लो
कोई यहाँ कुछ भी कहें
सन्देश है उनका यही
जो दुःख बाकी बच रहें

तुम भी सहो मैं भी सहूँ
तुम भी चलो मैं भी चलूँ

है भिन्न नावों की प्रगति
खेते स्वयं पर नाथ ही
हैं चाहते वे थे सभी
पहुँचें किनारे साथ ही

तुम भी बहो मैं भी बहूँ
तुम भी चलो मैं भी चलूँ

है कौन मुझे बहलाता ?

कौन बहलाता ?
जीवन की ज्वाला से विह्वल
जल उठता है जब मेरा मन
देने को तब सान्त्वना मुझे
बन नयनों में आँसू के कण
है कौन सामने आता ?
कौन बहलाता ?

जब निपट निराशा की लौ में
डरता है उर जल जाने को
तब निर्मम दीपक ज्वाला में
जलते बेबस परवाने को
है कौन मुझे दिखलाता ?
कौन बहलाता ?

चल पड़ते जब उच्छ्वास मधुर
लेकर कुचले अरमानों को
तब प्रकृति नटी से असन्तुष्ट
लाकर आँधी तूफानों को
है मुझको कौन हिलाता ?
कौन बहलाता ?

मधुमय जीवन की प्याली से
पी लेता हूँ जब मैं जी भर
तब निठुर सत्य बतलाने को
बनकर खुमार सहसा आकर
है मुझको कौन सताता ?
कौन बहलाता ?

जब वल्लरियाँ आशाओं की
इतराकर फिर कुम्हलाती हैं

पतझड़ हो जाने पर कितनी
कलिकाएँ मृदु मुरझाती हैं
है कौन मुझे सिखलाता ?
कौन बहलाता ?

मेरे इस उजड़े जीवन पर
उपहास विश्व जब करता है
तब कान्ति-हीन शशि मेघों में
कैसे निःश्वासें भरता है
है कौन मुझे बतलाता ?
कौन बहलाता ?

भूलें जीवन की जब मेरी
मेरा मन व्याकुल करती हैं
भूली भटकी भी सरिताएँ
निज पथ पर कायम रहती हैं
है कौन सुना यह जाता ?
कौन बहलाता ?

आँसू के कण ये क्या हैं ?

सुन लो यह पानी क्या है ?
यह एक कसकती स्मृति है जो
आँखों में आँसू बन आई
यह उर की आग बुझाने को
पीड़ा भरकर पानी लाई

आँसू के कण ये क्या हैं ?
सुन लो यह पानी क्या है ?

अपने जीवन की भूलों पर
दृग पर अनुताप उमड़ आया
अभिलाष-सुमन या कुम्हलाया
बनकर आँसू का कण आया

आँसू के कण ये क्या हैं ?
सुन लो यह पानी क्या है ?

जिसका स्वागत करने को हैं
चलती ये श्वासें पल-पल पर
प्रिय का पथ सिञ्चित करने को
निकले हैं आँसू के निर्झर

आँसू के कण ये क्या हैं ?
सुन लो यह पानी क्या है ?

शिशु के मृदु भोलेपन पर या
वात्सल्य पूर्ण माता का उर
पानी-पानी हो कर सहसा
है नयनों में छा गया प्रचुर

आँसू के कण ये क्या हैं ?
सुन लो यह पानी क्या है ?

याचक बनकर भी जग में जब
वह गई अचानक ठुकराई

निर्धन भिक्षुक की लाचारी
आँसू बन आँखों पर आई
आँसू के कण ये क्या हैं ?
सुन लो यह पानी क्या है ?

हो द्रवित दया से इस जग के
अनियन्त्रित अत्याचारों पर
आँसू बन कुछ कहता हमसे
मानवता का उर घुल-घुलकर
आँसू के कण ये क्या हैं ?
सुन लो यह पानी क्या है ?

लौटा क्यों अतिथि हमारा ?

अविरल दृग-जल धारा से
शुचि सींची हुई गली थी
हँसती स्वागत करने को
मुरझाई हृदय-कली थी
लौटा क्यों अतिथि हमारा ?

जलती उर आकांक्षाएँ
अपनी आरती सजाकर
थीं खड़ी हुई नयनों के
दोनों द्वारों पर जाकर
लौटा क्यों अतिथि हमारा ?

टूटे फूटे तारों को
फिर किसी भाँति झंकृत कर
गाती उर की वीणा थी
स्वागत के स्वर संचित कर
लौटा क्यों अतिथि हमारा।

करते थे प्राण प्रतीक्षा
अगणित उद्‌गार दबाकर
थे राह देखते प्रतिपल
उर आसन दिव्य सजाकर
लौटा क्यों अतिथि हमारा ?

था कितना सुन्दर वह सपना !

अभिशाप हुआ अपना जगना
शीतल कर अपनी ज्वाला को
था दीप शलभ को चूम रहा
लेकर स्वाती था चातक को
खोजता हुआ घन घूम रहा
थे सुधा सरस सरसाते शुचि
नभ से निशिनाथ उतर आये
लेकर चकोर को गोदी में
कुछ कहते थे हँस मनभाये
हँसती थीं फिर निज डाली पर
थीं जो मुरझाईं कलिकाएँ
चलता समीर कुछ था ऐसे
मृदु तुहिन न तृण से गिर पाएँ
था कितना सुन्दर वह सपना !
अभिशाप हुआ अपना जगना !
पहचानी थी जा रही नहीं
सहसा इतनी वह थी बदली
सुन्दर सरिताओं से सिंचित
थी सस्य-श्यामला मरुस्थली
जलधारा थी जा स्वयं निकट
तृष्णाकुल मृग को पिला रही
प्रत्येक बुभुक्षित को वसुधा
थी पूछ-पूछकर खिला रही
बदली थी दुनिया ही ऐसी
कोई क्या भला समझ पाये
सुख था मस्ती में झूम रहा
बैठा था दुख मुँह लटकाये
था कितना सुन्दर वह सपना !
अभिशाप हुआ अपना जगना !

बाजार

आने दो आनेवालों को
जाने दो जानेवालों को
करने दो सबको मोल-तोल
लें बोल सभी जी खोल-खोल
रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

आँसू की मोती की लड़ियाँ
उल्लास-मणिक भी सम्मुख हैं
प्रिय हों जिनको जो ले जायें
बिकते अपने सब सुख-दुख हैं
रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

वह रत्न-जटित सज्जित सुन्दर
उर की मंजुल अभिलाषा है
या इसे लीजिए यह अपने
जीवन की निपट निराशा है
रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

वह उधर देखिए खड़ा हुआ
अभिमान हृदय का है अपने
या इधर लीजिए निठुर सत्य
से छिन्न-भिन्न उर के सपने
रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

वे झूम रहीं हैं आशाएँ
जिनसे जीवन भर खेला है
या इधर आइए लगा हुआ
अपनी भूलों का मेला है

रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

जाइए उधर लीजिए मोल
वह मेरी दुनियादारी है
या इधर आइए यहाँ मुफ्त
मिलती मेरी लाचारी है
रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

पीजिए वहाँ है पिला रही
मेरे जीवन की मधुशाला
या आकर इधर जरा सुनिए
मधु में अन्तर्हित है ज्वाला
रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

जाइए आप जाइए सभी
यह मामूली बाजार नहीं
अनमोल यहाँ प्रत्येक वस्तु
रुककर बनिए लाचार नहीं
रक्खा है मैंने अपने मृदु
अरमानों का बाजार लगा ॥

है कितने दिन की मस्ती ?

है कितने दिन की मस्ती ?
कितने दिन की हस्ती ?
देखीं . उठती हमने जिसकी
नभ-छूती ऊँची मीनारें
कह रहीं विवश रोकर हमसे
गिरती उस घर की दीवारें
है कितने दिन की मस्ती ?
कितने दिन की हस्ती ?
जिनके चरणों पर बल वैभव-
यश होते थे नित न्योछावर
उनको जकड़े जंजीरों में
तकदीर पूछती थी हँसकर
है कितने दिन की मस्ती ?
कितने दिन की हस्ती ?
ऋतुपति का भी ऊधम देखा
पागल सा जो इतराता था
पर पतझड़ की भी बात सुनी
छिपकर पीछे जो आता था
है कितने दिन की मस्ती ?
कितने दिन की हस्ती ?
जलने से आकुल जब दीपक
अन्तिम निश्वासें भरता था
जल-जल कर तड़प-तड़प यों कह
प्रत्येक पतिङ्गा मरता था
है कितने दिन की मस्ती ?
कितने दिन की हस्ती ?

तुम आज भी न आये

घनघोर घिर घटायें
थीं रभ रहीं अदायें
उर की उमङ्ग कहती
थी किधर हाय जायें
तुम आज भी न आये।

उल्लास प्रेम-पूरित
पा मत्त मोर से नव
हँसती रही मयूरी
मुझको विलोककर जब
तुम आज भी न आये।

विकसित वसन्त वैभव
जग में लुटा रहा था
प्रत्येक श्वास अपना
तुमको बुला रहा था
तुम आज भी न आये।

थी चाँदनी विकल सी
विह्वल वियोगिनी बन
करती हृदय हमारा
अतिशय अधीर उन्मन
तुम आज भी न आये।

चंचल समीर से था
तन सिहरता हमारा
था रोम-रोम स्वागत
करता रहा तुम्हारा
तुम आज भी न आये।

अब भी सुकामनाएँ
निष्फल सभी रहीं यदि
किस भाँति रह सकेंगे
अब प्राण ये कहीं यदि
तुम आज भी न आये।

जो रोक सके, वह रोक ले!

युग कूलों पर प्रतिपल ठोकर
खाती भी जो हँसती जातीं
जो निज पथ पर आये अगणित
चट्टानों से लड़ती जातीं
लहरों के बेसुध गानों को
जो रोक सके, वह रोक ले।

विकसित वसन्त के सरस स्पर्श
से जब वसुधा हुलसाती है
या ऋतुपति का सन्देश मधुर
जो नेक नहीं कल पाती है
पगली कोयल की तानों को
जो रोक सके, वह रोक ले।

पुलकित प्रभात जब नवयौवन
सारे उपवन में लाता है
जब सिहरे कोमल गातों को
चञ्चल समीर छू जाता है
कलियों की मृदु मुसकानों को
जो रोक सके, वह रोक ले।

देखा करते हैं जो सम्मुख
कितनों ने निष्फल प्राण दिये
फिर भी आकर जो गिरते हैं
जल मरने का सन्देश लिये
मिटनेवाले परवानों को
जो रोक सके, वह रोक ले।

जो निपट निराशा की निशि में
भी अपना दीप जलाता है
औ स्नेह-हीन भी हो जिसका
वह दीप नहीं बुझ पाता है
दिल के उठते तूफानों को
जो रोक सके, वह रोक ले।

मैं आज न जाने दूँगी प्रीतम !

मैं आज न जाने दूँगी प्रीतम !
आज न जाने दूँगी ॥
तुम मेरी बात न सुनकर भी
जाने को प्रस्तुत होगे जब
अपने उर के अरमानों की
मैं आज तुम्हारे पथ पर तब
दीवार खड़ी कर दूँगी प्रीतम !
आज न जाने दूँगी ॥
सब दृश्य यहाँ मनभावन है
नभ में सावन घन छाये हैं
तुम रोके भी न रुकोगे तो
निज उर-घन भी घिर आये हैं
रसधार बहा दूँगी मैं प्रीतम !
आज न जाने दूँगी ॥
तुम ठुकराकर यदि चल दोगे
मेरे कोमल विश्वासों को
तो दूर नहीं जा पाओगे
पहरे पर निज निश्वासों को
दिन रात लगा दूँगी मैं प्रीतम !
आज न जाने दूँगी ॥
कब से जलती हूँ मैं जिसमें
जो देख तुम्हें होती शीतल
यदि जाओगे तो मग में निज
उर की उस ज्वाला से विह्वल
मैं आग लगा दूँगी तब प्रीतम !
आज न जाने दूँगी ॥
मैं दामन छोड़ न सकती हूँ
तैयार कहाँ चल देने को

तुम निर्मम बनकर भी देखो
पत्थर से टक्कर लेने को
पत्थर का दिल कर दूँगी प्रीतम !
आज न जाने दूँगी ॥

मेरी यदि बात न मानोगे
रोऊँगी चरणों पर गिरकर
जाने का फिर यदि नाम लिया
उर की आहों का मैं पथ पर
तूफान खड़ा कर दूँगी प्रीतम !
आज न जाने दूँगी ॥

सान्त्वना दूँ अब मैं किसको ?

सान्त्वना दूँ अब मैं किसको ?
हृदय मैं किसका बहलाऊँ ?

बुझा था दीप चरणों पर
पतिङ्गे थे पड़े सोते
देख वह दृश्य अति दुखमय
कहा मैंने यही रोते

सान्त्वना दूँ अब मैं किसको ?
हृदय मैं किसका बहलाऊँ ?

देखकर मंजु कलियों को
पड़ी धूलों में मुरझाई
तड़पता भृंग काँटों में
समस्या सामने आई

सान्त्वना दूँ अब मैं किसको ?
हृदय मैं किसका बहलाऊँ ?

लुटाकर चाँदनी अपनी
निरख श्री-हीन शशि-आनन
न हूँ मैं निश्चय कर पाता
चकोरी को लख उन्मन-मन

सान्त्वना दूँ अब मैं किसको ?
हृदय मैं किसका बहलाऊँ ?

लुटाया जिसने निज जीवन
लुटा खुद लूट जो उसको
बहुत दयनीय हैं दोनों
मुझे बतलाये कोई तो

सान्त्वना दूँ अब मैं किसको ?
हृदय मैं किसका बहलाऊँ ?

जीवन निज पथ पर चलता है

जीवन निज पथ पर चलता है।
वह अपने पथ पर चलता है॥

उर की कितनी आशाओं को
मृदु मंजुल अभिलाषाओं को
मिटते घुलते वह छोड़ यहाँ
आगे ही बढ़ता चलता है
जीवन निज पथ पर चलता है।
वह अपने पथ पर चलता है॥

अपनी अगणित भूलों पर भी
वह नहीं सोचने को रुकता
कोई कुछ भी हो कहता पर
वह अपनी कहता रहता है
जीवन निज पथ पर चलता है।
वह अपने पथ पर चलता है॥

वह कभी इधर को झुकता है
वह कभी उधर को झुकता है
लेकिन वास्तव में पागल-सा
वह अपनी धुन में बहता है
जीवन निज पथ पर चलता है।
वह अपने पथ पर चलता है॥

कोई भी उसको टोक सके
कोई भी उसको रोक सके
यह सम्भव हो न कभी सकता
वह तो अपनी जिद रखता है
जीवन निज पथ पर चलता है।
वह अपने पथ पर चलता है॥

पीते-पीते निशि बीती

पीते-पीते निशि बीती।
जीवन-मधुशाला रीती॥

सोने का सा संसार लिये
मृदु नव-जीवन संचार लिए
आई जब ऊषा मैं रोया
अनुताप अमित निस्सार लिये
पीते-पीते निशि बीती।
जीवन-मधुशाला रीती॥

कल तो मधु थी मधुबाला थी
भर भर देती जो प्याला थी
सोचा न हुई जाती प्रतिपल
खाली अपनी मधुशाला थी
पीते-पीते निशि बीती।
जीवन-मधुशाला रीती॥

रुक-रुककर पीनेवालों पर
मन ही मन मैं मुसकाता था
मधु से जो दूर रहा करते
उनकी तो हँसी उड़ाता था
पीते-पीते निशि बीती।
जीवन-मधुशाला रीती॥

मधुमय था जग मधुमय जीवन
मधु में डूबे अपने तन-मन
स्वप्नों का टूटा एक तार
कह उठा अचानक पीड़ा बन
पीते-पीते निशि बीती।
जीवन-मधुशाला रीती॥

काटा करते थे जो चक्कर
मधुशाला के दरवाजे पर
फिर भी न जिन्हें मधु अपनाती
हँसते हैं मुझ पर वे कहकर
पीते-पीते निशि बीती।
जीवन-मधुशाला रीती॥
अपने दिल को कर पत्थर लो
हँस लो पर इतना तो कर दो
मधु से मैं दूर न रह सकता
मेरी मधुशाला फिर भर दो
पीते-पीते निशि बीती।
जीवन-मधुशाला रीती॥

है रुकने का कुछ काम नहीं

यह बहती सरिता कहती है
आफत से दिल क्यों घबराये
मैंने तो उनको तोड़ दिया
पथ पर जो पर्वत भी आये
है रुकने का कुछ काम नहीं ॥

वह उन्नत मस्तक वृक्ष खड़ा
कहता सुन लो मेरी बातें
काटे हैं कितने ग्रीष्म ताप
हिमवृष्टि भयानक बरसातें
है झुकने का कुछ काम नहीं ॥

तूफान चले कितने फिर भी
जो हिला न नेक तपस्या से
वह अटल अचल भूधर हमसे
कहता है कठिन समस्या से
है कँपनेका कुछ काम नहीं ॥

चलता समीर कहता जाता
कुछ कहे विश्व मैं चलता हूँ
तुम भी निज पथ पर चले चलो
किसको प्रिय किसको खलता हूँ
यह सुनने का कुछ काम नहीं ॥

मैं राह देखती कब से प्रीतम !

मैं राह देखती कब से प्रीतम !
राह देखती कब से ?
अकुलाई देख मयूरी को
उन्मत्त मोर गाता आया
रोती लख दीन चकोरी को
शशि ने घन से मुख दिखलाया
मैं राह देखती कब से प्रीतम !
राह देखती कब से ?
वसुधा की प्यास बुझाने को
सहृदय घन घुमड़-घुमड़ आये
भ्रमरों का जी बहलाने को
उपवन में पाटल मुसकाये
मैं राह देखती कब से प्रीतम !
राह देखती कब से ?
पल भर जो दूर न रह सकती
उसके उर को हुलसाने को
आ गया कपोत कपोती को
प्रणयातुर गीत सुनाने को
मैं राह देखती कब से प्रीतम !
राह देखती कब से ?
आओगे तुम भी आओगे
कहता हमसे है आकुल मन
विश्वास यही लेकर अपना
पथ देखूँगी मैं आजीवन
मैं राह देखती कब से प्रीतम !
राह देखती कब से ?

नहीं कर तू इसकी परवाह

कि तेरी आशा लतिका नित्य
हिला जाता समीर प्रतिकूल
और असमय ही उसके मञ्जु
अनेकों झड़ जाते हैं फूल
नहीं घबराकर लतिका तोड़
नहीं कर तू इसकी परवाह ॥

जलाया तूने अमर प्रदीप
हृदय में ले अखण्ड विश्वास
पवन के झोंके खा वह आज
ले रहा यदि अन्तिम निश्वास
दीप में और स्नेह तू छोड़
नहीं कर तू इसको परवाह ॥

कण्टकाकीर्ण मार्ग विकराल
और है दूर बहुत वह गाँव
पकड़कर साथी तेरे भीरु
खींचते हैं पीछे को पाँव
नहीं तू चलने से मुँह मोड़
नहीं कर तू इसकी परवाह ॥

दीखता नहीं व्योम के बीच
एक भी है तारा अम्लान
घिरी है घटा महा घनघोर
सामने है आता तूफान
लगा ले विपदाओं से होड़
नहीं कर तू इसकी परवाह ॥

आता होगा, आता होगा !

थी ग्रीष्मातप पीड़ित वसुधा
थे छोड़ रहे जब सब साहस
तब दीन शिखी से आ चुपके
कह कौन गया तेरा पावस
आता होगा, आता होगा !

नैराश्य तिमिर भरती निशि में
निष्फल निश्वासों से अपने
उस विकल विरहिणी से आशा
है कह जाती बनकर सपने
आता होगा, आता होगा !

हिमत्रास-व्यथित कोयल भूली
थी जो अपने सुमधुर गाने
सन्देश उसे दे कौन गया
मधुमास सरस सुख सरसाने
आता होगा, आता होगा !

घनघोर घटाएँ घिर नभ में
जब उमड़ घुमड़ थीं घूम रहीं
किसने तब कहा चकोरी से
मेघों का दलशशि चीर कहीं
आता होगा, आता होगा !

मिलता न किन्तु कोई मुझको
कह दे जो निश्चित एक बात
देखो दुख की निशि बीत चुकी
नव आशाएँ लेकर प्रभात
आता होगा, आता होगा !

किसी की याद आती है

दिखाता है अतुलित वैभव
पुलक जब पावस प्रमुदित मन
उमड़ उठ-उठकर आते हैं
घुमड़ चिर मुखमय सावन-घन

बहुत बहलाता हूँ जी पर
किसी की याद आती है।

सरस सुमनों पर द्रुम-द्रुम पर
छटा मधुमास की छाती
कूक जब कोयल एकाकी
व्यथा निज उर की दुहराती

अनेकों यत्नों पर भी तो
किसी की याद आती है।

पहनकर हीरक माला जब
श्वेत वसना विह्वल रोती
विरहिणी-सी है मृदु ज्योत्स्ना
गिरा जाती अगणित मोती

सजल दृग कहते हैं अपने
किसी की याद आती है।

मोर गाकर जब उपवन में
नाच उठता है मस्ती से
उमड़ उठती उमङ्ग कैसी
हृदय की उजड़ी बस्ती से

कि है कह रोम-रोम उटता
किसी की याद आती है।

देखकर निर्मम दीपक पर
शलभ को पागल-सा जलते
चूमने को शशि का आनन
उमड़ उठ सागर जो चलते

विफल जीवन रो कहता है
किसी की याद आती है।

अन्त जब आयेगा अपना
सुलाने को सुमधुर सपने
अचानक आकर तब निश्चय
विकल इन प्राणों से अपने

यही आवाज आयेगी
किसी की याद आती है।

भर आते ये मेरे लोचन

ये देख दुर्बलों पर प्रतिदिन
जुल्मों का निर्भीक प्रदर्शन
धनवानों की निर्दयता औ
दीन जनों का निष्फल रोदन
भर आते ये मेरे लोचन।

लख वस्त्र-हीन दयनीय दीन
जर्जर-तन अति आकुल मानव
को मौन लुटाते जहाँ तहाँ
आँसू का निज अतुलित वैभव
भर आते ये मेरे लोचन।

फिर विपुल वंचना से होते
लख निश्छल को पीड़ित प्रतिपल
क्रूर कुटिल कुत्सित कर्मों से
सुजनों के मन मर्दित कोमल
भर आते ये मेरे लोचन।

सुन मूर्ख जनों के अहंकार
के सन्मुख ज्ञानी को रोते
हृदय-हीन जन के पाँवों पर
सहृदय को निज गौरव खोते
भर आते ये मेरे लोचन।

किधर जा रहा विश्व हमारा
किधर जा रहा है यह मानव
कभी सोचता हूँ जब मैं यह
मानव मानव है या दानव
भर आते ये मेरे लोचन।

कहनेवालों को कहने दो

कहनेवालों को कहने दो,
हँसनेवालों को हँसने दो।
मैं अपने पथ पर चलता हूँ
गिरता हूँ कभी सँभलता हूँ
अपनी जिद रखने को हरदम
लड़ता हूँ और मचलता हूँ
कहनेवालों को कहने दो
हँसनेवालों को हँसने दो।
इन बेसुर गानेवालों के
स्वर से स्वर नहीं मिलाया है
मैंने लेकिन अपने स्वर से
दिल पत्थर-सा पिघलाया है
कहनेवालों को कहने दो,
हँसनेवालों को हँसने दो।
कुछ भी न किसी को दिया यहाँ
कुछ भी न किसी से पाया है
दुनिया के आगे यह अपना
दामन न कभी फैलाया है
कहनेवालों को कहने दो,
हँसनेवालों को हँसने दो।
दो मुझे नहीं अपने आँसू
चाहता किसी से त्याग नहीं
आँसू के बूँदों से बुझती
मेरे उर की वह आग नहीं
कहनेवालों को कहने दो,
हँसनेवालों को हँसने दो।

आ सकी काम कुछ भी यद्यपि
अब तक कोई तदवीर नहीं
पर फिर भी दिन फिर सकते हैं
इतनी खोटी तकदीर नहीं
कहनेवालों को कहने दो,
हँसनेवालों को हँसने दो।

मिलते हैं मुझे नहीं ऐसे
मुझको जो कुछ पहचान सकें
हैं विरले ही दिलवाले जो
मेरी पीड़ा को जान सकें
कहनेवालों को कहने दो,
हँसनेवालों को हँसने दो।

जल रहे सब जल रहे हैं!

जल रहे हैं शलभ विह्वल
दीप भी वह जल रहा है
व्योम में प्रतिदिन दिवाकर
विकल जलता चल रहा है
जल रहे सब जल रहे हैं!

भर रही निःश्वास रजनी
जल रहे नभ के सितारे
जल रही आकुल चकोरी
चाँद से उड़ते अँगारे
जल रहे सब जल रहे हैं!

जल रही विच्छिन्न कलिका
नियति की पदमर्दिता-सी
जल रहा चातक तृषा में
जल रही मरुभूमि प्यासी
जल रहे सब जल रहे हैं!

जल रहा है धूप में उस
कृषक कर्मठ का कृषित तन
जल रहा धनहीन का उर
जल रहा है कृपण का मन
जल रहे सब जल रहे हैं!

जल रही है विरहिणी वह
जल रहा प्रेमी प्रवासी
जल रही है विवश विधवा
शृङ्खला की दीन दासी
जल रहे सब जल रहे हैं!

नित्य नयनों को जलाते
अश्रु के जलते फुहारे
जल रहे सबसे अधिक वे
हैं व्यथित जो मौन धारे
जल रहे सब जल रहे हैं।

जल चुकी आशा कभी की
जल चुके अरमान मेरे
जल चुका अपना हृदय भी
जल रहे हैं गान मेरे
जल रहे सब जल रहे हैं।

अपना वश कब तक चलता है?

अपनी सोची बातें कितनी
पूरी हो पाती हैं जग में
अनजान अचानक हो जाती
दीवार खड़ी अपने मग में
अपना वश कब तक चलता है ?

दिन-रात कृषक मरता रहता
खेतों में ले मृदु आशाएँ
क्षण में ओले करते निष्फल
उसकी कितनी अभिलाषाएँ
अपना वश कब तक चलता है ?

लावण्य-लोक की लतिका-सी
यौवन मदमाती मृदु बाला
की माँग लाल होते ही आ
वैधव्य खड़ा होता काला
अपना वश कब तक चलता है ?

अभिमानी ऊँची मीनारें
रचते जो स्वप्न सुनहलों से
पल में ही फूक उड़ा देती
है नियति कागजी महलों से
अपना वश कब तक चलता है ?

मानव तू ने उन्नति की है
मानव तू आगे बढ़ा बहुत
पर एक बात मेरी भी सुन
तू यद्यपि ऊँचे चढ़ा बहुत
अपना वश कब तक चलता है ?

धरे ललाट पर

धरे ललाट पर अतिशय
अद्भुत ज्यों एक नगीना
अगणित निज दीप जलाकर
रजनी विश्राम - विहीना
पथ किसका निहारती है ?
बैठी कोयल एकाकी
मंजुल रसाल-डाली पर
उर की तड़पन से आकुल
दुहराकर निज कातर स्वर
यह किसको पुकारती है ?
लतिका नव ललित निरुपमा
सुषमा मंजुल दिखलाकर
सुखमय समीर से चंचल
संकेतपूर्ण इठला कर
मन किसका लुभा रही है ?
कल-कल निनादिनी तरुणी
अविचल निज अविरल पथ पर
शुचि तरङ्गिणी पुलकित तन
प्रमुदित मन उछल-उछलकर
नित किसको बुला रही है ?

भोली ऊषा मृदु सहसा
अनुराग - राग - रञ्जित - सी
अपनी बेसुध व्रीड़ा से
सकुचाई सी शङ्कित - सी
मन किस पर लुटा रही है ?
कह सुनकर थकी हुई सी
हो उदासीन सी सबसे
अव्यक्त-व्यथा-विह्वल अति
कवि की वाणी यह कब से
कुछ किसको सुना रही है ?

असहाय मेरी कल्पना

असहाय मेरी कल्पना
अभिशाप बनकर रह गई !
मृदु स्वप्न हैं अपने सभी
बस स्वप्न ही तो रह गये
हैं सत्य से टकरा सभी
बन अश्रु के कण बह गये
मेरे हृदय की कामना
अनुताप बनकर रह गई !
है परम पावन प्रेम का
पाये नहीं जो मोल कर
हम पर निरन्तर वे सभी
हँसते रहे जी खोलकर
कब की सँजोई साधना
है पाप बनकर रह गई !
तकदीर ही मेरी स्वयं
कैसा तमाशा बन गई
जिस पर भरोसा था बहुत
आशा दुराशा बन गई
शीतल शरद की ज्योत्स्ना
भी ताप बनकर रह गई !

रुक नहीं पथिक, तू देर न कर

औरों को रौंद कुचल चलती
है चलनेवालों की टोली
तू भी चल मेरी मान, न है
दुनिया दिखती जितनी भोली
रुक नहीं पथिक, तू देर न कर।

अच्छा है कौन बुरा है पथ
इस पर तू उतना ध्यान न दे
अच्छे को और बुरे को तो
दुनिया भूली तू जान न दे
रुक नहीं पथिक, तू देर न कर।

सोचता रहा यदि तू पथ पर
तुझको भी कोई कुचलेगा
अपनेपन में पागल सब हैं
इसको न जमाना बदलेगा
रुक नहीं पथिक, तू देर न कर।

धिक्कार उठे तेरा ही मन
तू कोई ऐसी राह न धर
पर यह दुनिया क्या कहती है
इसकी तो तू परवाह न कर
रुक नहीं पथिक, तू देर न कर।

है बान वही है शान वही

है बान वही है शान वही
तू नित्य नई ही रहती है।
कितने वसन्त गाये तूने
कितने पतझड़ झेले तूने
कूकी कितने हिमतापों से
बरसातों से खेले तूने
है अब भी लेकिन तान वही
तू नित्य नई ही रहती है।
डाली रोयी माली रोया
लख कुम्हलाया तेरा आनन
पर कलिके तेरे अधरों पर
सुनकर मधुपों का मृदु गुंजन
आ जाती है मुसकान वही
तू नित्य नई ही रहती है।
भर निःश्वासें बुझती हस्ती
कितनों की देख तमाम हुई
पर शमा कहाँ से है तुझमें
सहसा बस ज्यों ही शाम हुई
आ जाती फिर से जान वही
तू नित्य नई ही रहती है।
जा चुकी कभी की है जिसके
अपमानों की दुनिया लूटी
सुमधुर स्मृति कब तूने छोड़ी
उर तन्त्री से कवि की टूटी
झंकृत हो उठते गान वही
तू नित्य नई ही रहती है।

हम तुम दूर-दूर होंगे

नभ में नव उमड़-घुमड़कर
आयेगा घिर जब सावन
सुखमय समीर मृदु रिमझिम
से सिहर उठेंगे जब तन
हम तुम दूर-दूर होंगे।

सुषमा सुदिव्य सरसाती
अपनी छवि में मतवाली
सन्ध्या सुहासिनी मधु की
देगी जब भर-भर प्याली
हम तुम दूर-दूर होंगे।

अतुलित शोभा नित अपनी
क्षिति पर छा अति पुलकित मन
करता होगा जब कुसुमित
विकसित वसन्त बन-उपवन
हम तुम दूर-दूर होंगे।

ऊषा जब प्रेम पगी सी
सकुचाई और ठगी सी
मृदु स्वप्न जाल नित लाकर
फैला पलकों पर देगी
हम तुम दूर-दूर होंगे।

उल्लासपूर्ण गीतों से
प्रमुदित मयूर प्रणयातुर
जागृत उर में कर देंगे
जब आशाओं के अंकुर
हम तुम दूर-दूर होंगे।

अतिशय अधीर आकुल उर
ज्योत्स्ना जब कभी अकेली
जल-थल द्रुम-द्रुम कण-कण से
पूछेगी अमर पहेली
हम तुम दूर-दूर होंगे।

आ दीप-शिखा चरणों पर
पागल-सा व्यर्थ मचलना
आँखें भर-भर आयेंगी
जब देख शलभ का जलना
हम तुम दूर-दूर होंगे।

हम विरह-वेदना-विह्वल
पी जब प्रेमासव होंगे
चेतना हीन दोनों के
दिल चूर-चूर जब होंगे
हम तुम दूर-दूर होंगे।

मृत्यु-शय्या

घेरे रहती है तुझको
मानवता की लाचारी
हो शक्तिहीन सर धुनतीं
हैं सबल शक्तियाँ सारी

तेरे समीप दिखलाती
है आशा अभिनय अपना
तुझ पर सो देखा करता
मानव जीवन का सपना

तुझसे विनीत बन जाते
हैं बड़े-बड़े अभिमानी
हैं ज्ञानहीन हो जाते
सब बड़े-बड़े मुनि ज्ञानी

अति दीन भाव से आकुल
आ रङ्क, नृपति औ रानी
तुझको हैं सभी सुनाते
निज प्रायश्चित्त कहानी

तुझ पर आ बिखरा जाता
है यौवन अपना वैभव
क्रीड़ा अन्तिम कर जाता
तेरी गोदी में शैशव

तुझ पर शङ्कित प्राणों की
है कठिन तपस्या होती
तेरे चारों चरणों पर
निरुपाय विवशता रोती

हैं बड़े यत्न से बिछते
तुझ पर बहुमूल्य बिछौने
हैं जिन पर आ सो जाते
मिट्टी के विफल खिलौने

हैं बड़ी-बड़ी आशाएँ
चिर-सञ्चित अभिलाषाएँ
बैठी निःश्वासें भरतीं
तेरे दाएँ औ बाएँ

तेरे समीप ही आकर
बहुतों की आँखें खुलतीं
कर सके किन्तु वह कुछ भी
इसके पहले हैं मुँदतीं

खोकर अपने को भी तुमको

हूँ मैं अब तक तो पा न सका
सब राग भुला सब छन्द भुला
मैं राग तुम्हारा गा न सका।

जो कुछ हाथों से गया कभी
फिर वह जीवन में आ न सका
चाहते किन्तु थे जो कुछ तुम
वह सब सन्मुख मैं ला न सका।

कोई न सुनेगा तेरी

पावस-प्रमत्त-प्रमुदित मन
करता मयूर नव नर्तन
सुनने को नहीं रुकेगा
तेरा ग्रीष्मातप वर्णन
कोई न सुनेगा तेरी।

अपनी अपनी डाली पर
विकसित कोमल कलिकाएँ
सुनकर केवल हँस देंगी
अलि ! तेरी व्यथा-कथाएँ
कोई न सुनेगा तेरी।

जो शुभ्र चाँदनी में ही
करते हैं नित्य सबेरा
वे देख न सकते तेरे
उर का अविराम अँधेरा
कोई न सुनेगा तेरी।

उल्लास भरी लहरों में
है जिन्हें बहाता सागर
क्या उन्हें कभी भायेगी
तेरे आँसू की गागर
कोई न सुनेगा तेरी।

प्रेमी मधुमय प्रणयासव
की प्याली में पागल हो
कब विरह-व्यथा को तेरी
सुन सके भला विह्वल हो
कोई न सुनेगा तेरी।

सम्पत्ति स्वयं है चेरी
जिन चरणों की मनमानी
उनको न कभी भायेगी
निर्धन की करुण कहानी
कोई न सुनेगा तेरी।

विरले ही समझ सकेंगे
सुख क्या है औ, दुख क्या है
कवि व्यर्थ न नित गाया कर
सुख में पागल दुनिया है
कोई न सुनेगा तेरी।

मेरे सिवा कोई नहीं

असहाय वह जिसके लिए
वन हास भी क्रन्दन गया
ऐसा मधुप जिसको स्वयं
हो फूल काँटा बन गया
मुझको मिला अब तक यहाँ,
मेरे सिवा कोई नहीं।

है चाँदनी में भी अमित
जिसको अँधेरा ही मिला
पीयूष-पावन पात्र भी
जिसको सका विष ही पिला
हत भाग्य ऐसा है कहाँ ?
मेरे सिवा कोई नहीं।

वह मोर जिसने व्यर्थ ही
हो ग्रीष्म का आतप सहा
स्वाती-सुधा की वृष्टि में
भी तृषित जो चातक रहा
उत्तर मिला पूछा जहाँ,
मेरे सिवा कोई नहीं।

उपहास निर्मम विश्व के
सहता रहा जो मौन है
हँस भाग्य ने पूछा जिसे
मैंने रुलाया कौन है
था दीन एक खड़ा वहाँ,
मेरे सिवा कोई नहीं।

असमंजस

था कोलाहल इतना कुछ भी
था नहीं समझ में आ सकता
मैं सुनने में ही लीन रहा
मैं अपनी कुछ भी कह न सका।

संगीत छेड़कर मस्त सभी
थे अपनी-अपनी तानों में
मैं उनके स्वर में गा न सका
अपनी लय में भी बह न सका

थे कितने कराहते जग की
तीखी ज्वाला की तड़पन में
वह आग बुझाने मैं लपका
निज उर की आग बुझा न सका

मैं देख रहा था दुनिया को
दुनिया ने मुझे नहीं देखा
दुनिया में रहते हुए साथ
मैं इस दुनिया के रह न सका।

थे मार्ग पृथक औ, पृथक-पृथक
थीं चलनेवालों की टोली
असमंजस में क्या खूब पड़ा
अपने पथ पर भी चल न सका।

आओ, जीवन-धन आओ

मेरे प्यासे जीवन में
शीतल जीवन बन आओ
भिक्षुक की भिक्षा बनकर
निर्धन के धन बन आओ
आओ, जीवन-धन आओ।

मरुभूमि सदृश जलता जब
कह दे मेरा मन आओ
तब उमड़-घुमड़कर सहसा
तुम सावन घन बन आओ
आओ, जीवन-धन आओ।

पीड़ा की तड़पन में जब
मैं कहूँ हृदय-धन आओ
मेरे नयनों में बनकर
आँसू के लघु कण आओ
आओ, जीवन-धन आओ।

जब मृत्यु शान्ति देने को
कहती हो उन्मन आओ
जब मुक्ति हृदय पाता हो
अन्तिम बन्धन बन आओ
आओ, जीवन-धन आओ।

है कैसी आँखमिचौनी

कैसी आँख-मिचौनी !
तुमको जब खोजा करता हूँ
हँसते फूलों की डाली पर
तुम बैठे रहते हो छिपकर
अलि की पीड़ा मतवाली पर
यह कैसी आँख-मिचौनी,
कैसी आँख-मिचौनी !

देखा करता हूँ जब तुमको
मैं सावन की हरियाली में
तुम जाकर तब छिप जाते हो
मरुथल की प्यासी प्याली में
यह कैसी आँख-मिचौनी,
कैसी आँख-मिचौनी !

मैं तुम्हें खोजता फिरता जब
भूपति के भूषित भवनों में
रहते हो तुम अनजान तभी
भूखे-प्यासों के सुमनों में
यह कैसी आँख-मिचौनी,
कैसी आँख-मिचौनी !

था यही सोचता जीवन में
तुम सुख बनकर हो आओगे
मैं था यह नहीं समझ पाया
तुम दुख बन सुख दे जाओगे
यह कैसी आँख-मिचौनी,
कैसी आँख-मिचौनी !

अब भी

है उन स्वप्नों की छाया;
अब भी उर में छा जाती;
सुधि एक कसक सी उठकर
है कभी-कभी आ जाती।
उन बीते विकल क्षणों की
स्मृति जीवन विकल बनाती;
है कभी-कभी उर-तन्त्री
अब भी वह राग बजाती।
मादकता चली गई है
अब भी खुमार है बाकी;
नयनों के सम्मुख अब भी
आ जाती है वह झाँकी।
बुझ गई ज्योति जीवन की
है अन्धकार-सा छाया;
पर कुछ प्रकाश सा अब भी
दिखला जाती है माया।
हैं छोड़ गई मुझको अब
वे मतवाली आशाएँ;
उर उकसा जाती हैं पर
अब भी मृदु अभिलाषाएँ
जर्जर जीवन में उठता
है कभी तड़प नव-जीवन;
चेतना-हीन कर देता
है कभी-कभी पागलपन।

किसने देखा, किसने जाना ?

ले कौन आग अपने दिल में
किस पागलपन में दीवाने
किस लिए दीप के कदमों पर
जल मरते हैं ये परवाने
किसने देखा, किसने जाना ?

जल थल में सुख सरसाता जब
ले चाँद चाँदनी है आता
खिल उठती है सारी दुनिया
है क्यों चकोर तब अकुलाता
किसने देखा, किसने जाना ?

पावस आया प्यासे जग के
जड़ चेतन में सुख लहराया
थी प्यास किन्तु कैसी उसकी
चातक न बुझा जिसको पाया
किसने देखा, किसने जाना ?

जग झूम उठा ले जब आया
मधुमास मदिर मधु का प्याला
क्यों कवि का उर रो पड़ा किन्तु
था पहले से जो मतवाला
किसने देखा, किसने जाना ?

हूँ मैं न कभी भी एकाकी

मेरे दुख मेरी निःश्वासें
मेरी पीड़ा मेरे सपने
दृग के अविरल आँसू अविचल
हैं ये साथी हरदम अपने
हूँ मैं न कभी भी एकाकी।

मेरी चिन्ताएँ भ्रम मेरे
आकुल उर के ये क्रम मेरे
रहते हैं साथ सदा मेरे
जीवन के निठुर नियम मेरे
हूँ मैं न कभी भी एकाकी।

तुम साथ नहीं मेरे लेकिन
सुमधुर स्मृतियाँ तो रहती हैं
पुलकित करतीं प्रतिपल तन मन
जो रोम-रोम में बहती हैं
हूँ मैं न कभी भी एकाकी।

यह भी नहीं, वह भी नहीं

पथ जो नियति निर्दिष्ट था
या जो हृदय को इष्ट था
अच्छे बुरे के फेर में, अब तक यहाँ मुझको मिला
यह भी नहीं, वह भी नहीं।

उर की अनेकों टेक से
लड़ता रहा सु विवेक से
गिरकर उठा, उठकर गिरा, पर अन्त में मुझसे हुआ
यह भी नहीं, वह भी नहीं।

निज पर मुझे अभिमान था
पर आपका भी ध्यान था
क्या खूब असमंजस हुआ अब हाथ में मेरे रहा
यह भी नहीं, वह भी नहीं।

फूलोंवाली

थी सहज सुघर भोली भाली।
डाली-डाली से सरस-सुमन
चुन भरती थी अपनी डाली
पुलकित सी करती थी तन मन
कमनीय कपोलों की लाली
वह रूप-राशि फूलोंवाली।

पागल थे अब फिर पागल बन
दृग-कञ्जों पर मृदु मँडराकर
तजकर अपना मधुमय गुञ्जन
भूले फूलों को मञ्जु भ्रमर
वह मदिर नयन फूलोंवाली।

सुन्दर सुडौल पतली-पतली
कोमल-कोमल फैली बाहें
लख लज्जित सी तरु से लिपटी
मञ्जुल लतिका भरती आहें
वह विकच-बदन फूलोंवाली।

बाल-विधवा के प्रति

ऐ निपट निरुपाय ऐ जग की व्यथा
कौन कह सकता करुण तेरी कथा ?
देख तुझको आँख भर आती सदा
था यही क्या भाग्य में तेरे बदा।

जो न होना था वही सब हो गया
सौख्य असमय हाय तेरा खो गया।
मृत्यु जीवन का प्रदीप बुझा गई
जो न खिल पाई कली मुरझा गई।

स्वयं तू हँसती रही निज लूट पर
और जग रोया अभाग्य अटूट पर।
लुट गया वह धन न जिसका ज्ञान था
क्या हुआ तुझको न इसका ध्यान था।

दिन न सुख के देख पाई चार भी
जान तक पाई न अपनी मार भी।
है न सुन पाता न सुन सकता कोई
सजल नयनों की पवित्र पुकार भी।

विश्व सागर की भयङ्कर धार है
चल रहा अतिशय असह्य बयार है।
हाय ! खेने को नहीं पतवार है
और यह नौका पड़ी मझधार है।

जिसके बनने की न कुछ तदवीर है
तू वही फूटी हुई तकदीर है।
तड़पकर दिल हाय रह जाता है जब
सामने आती तेरी तसवीर है।

सर्वथा निर्दोषियों को पीसता
आँसुओं से जो सदा उर सींचता।
क्या कहूँ इस कुटिल क्रूर समाज को
जो न रख पाता है स्वयं निज लाज को।

अलि एक कली से प्यार न कर

तू देख अरे उन अलियों को
जो कली कली पर मँडराते
कितना स्वागत सस्मित मुख से
कितना आदर हैं वे पाते
अलि एक कली से प्यार न कर।

प्रतिदिन हँसनेवाले कितने
आते पुलकित नभ में तारे
हँसकर रोनेवाले शशि पर
तू नित्य चकोरी मन मारे
अपना जीवन निस्सार न कर।

पावस प्रेमी प्रमुदित-मन वह
मद मस्त मयूर बना नर्तक
उठ तू भी गा उसके सँग में
स्वाती की बूँदों पर चातक
तू अपने को लाचार न कर।

हँसने को और हँसाने को
आतीं सुखमय घड़ियाँ कितनी
कवि अपना जी बहला इनसे
रो-रोकर पूजायें इतनी
तू पत्थर की बेकार न कर।

हम क्यों आते, हम क्यों जाते ?

आनेवाले न बता सकते
जानेवाले न समझ पाते
यह एक समस्या है ऐसी
बीते कितने युग सुलझाते
हम क्यों आते, हम क्यों जाते ?

आनेवालों से बाँह खोल
हँस-हँस मिलते दुनियावाले
जानेवालों पर रोते क्यों
जब नहीं जानते मतवाले
हम क्यों आते, हम क्यों जाते ?

दुनिया का हम कुछ ले जाते
दुनिया को कुछ दे जाते हैं
इस लेन-देन का अन्त नहीं
इससे हम आते-जाते हैं
हम क्यों आते, हम क्यों जाते ?

देखा किया, देखा किया

जी की नहीं कहने दिया
चुप भी नहीं रहने दिया
जिसने नहीं सोने दिया, सुख से वही सोता रहा।
देखा किया, देखा किया।

जिसका सभी कुछ लुट गया
असमय गला भी घुट गया
उस पर सभी हँसते रहे, वह भाग्य पर रोता रहा।
देखा किया, देखा किया।

असहाय दुर्बल दीन पर
अन्याय सबलों का प्रखर
छल की विजय सौजन्य पर सब सामने होता रहा।
देखा किया, देखा किया।

मैं भुला दूँगा तुम्हें तब

जब तीखे कण्टकों से
मञ्जु-मधुमय पुष्प पर
जब न मँडराया करेंगे
व्यथित बन विह्वल भ्रमर
मैं भुला दूँगा तुम्हें तब।

निपट निष्ठुर दीप से जब
शलभ हो-होकर विफल
त्याग देंगे विवशता से
प्रणय को अपने अटल
मैं भुला दूँगा तुम्हें तब।

देख शशि को तुमुल तम पर
विहँस हँस पाते विजय
जब न आयेगा उमड़ अति
समुद्र सागर का हृदय
मैं भुला दूँगा तुम्हें तब।

भूल जायँगे विवश हो
प्राण ही को प्राण जब
औ न पायेगा हृदय को
हृदय ही पहचान जब
मैं भुला दूँगा तुम्हें तब।

विह्वल हैं देख उन्हें सब जो

आँसू दृग से झर जाते हैं
हैं कहीं अधिक वे करुण किन्तु
जो नहीं आँख तक आते हैं

रो-रो उठती है यह दुनिया
दुखियों की करुण कथाओं से
है किन्तु अपरिचित वह रहती
कितनी अव्यक्त व्यथाओं से

लख उन्नत मस्तक सफलों का
विस्मित सा जग रह जाता है
निष्फल सपने नतमस्तक के
पर नहीं समझ वह पाता है

बस, शोर मचानेवाले ही
कहते होंगे सब बात सही
है धैर्य एक अभिशाप यहाँ
है दुनिया का दस्तूर यही

तुम भी न गा उठना कभी मेरी सुरीली तान पर

मैं निठुर रोदन को लिये
अभिशाप हूँ अतिशय प्रखर
तुम भी न हँस पड़ना कभी
मेरी मधुर मुसकान पर
तुम भी न गा उठना कभी मेरी सुरीली तान पर।

मैं नाश की ही मूर्ति हूँ
है नाश मेरे हास में
तुम भी न खिल जाना कहीं
इस क्षणिक व्यर्थ विकास में
तुम भी न गा उठना कभी मेरी सुरीली तान पर।

इन बादलों में वेदना
है छिपी दिन ज्यों रात में
तुम भी बरस पड़ना नहीं
मेरी कहीं बरसात में
तुम भी न गा उठना कभी मेरी सुरीली तान पर।

मानव अभी तक है वहीं

निज दुख बटाने के लिए
हम खोजते साथी सदा
पर हैं अकेले चाहते
हम भोगना सुख सर्वदा
है स्वार्थ भाव घटा नहीं
मानव अभी तक है वहीं।

जर्ब नित्य दुर्बल पर सबल
ही विजय पाता आज भी
सद्भाव और समानता
कहते न आती लाज भी
क्या पशु प्रवृत्ति गई कहीं
मानव अभी तक है वहीं।

भूले स्वयं सर्वेश को
विज्ञान-मद में चूर हम
प्रत्येक पग पर हो रहे
उससे अधिक ही दूर हम
सब विफल चेष्टाएँ रहीं
मानव अभी तक है वहीं।

निठुर ! कैसे न आओगे ?

नभ में घुमड़ घन जब घहर
देंगे बहा सुख की लहर
कर विकल जब देगी हृदय
छवि विपुल पावस की छहर
तुम रुक न पाओगे
सदय ! कैसे न आओगे ?

सजा शुचि साज नित नूतन
लुटाता निज अतुल छवि-धन
विहँस ऋतुराज जब देगा
खिला उल्लसित वन-उपवन
तुम सिहर जाओगे
सरस ! कैसे न आओगे ?

गिरा जब अश्रु के मृदु कण
द्रवित होंगे विमल उडुगण
तुम्हारे ध्यान में होंगे
विलखते प्राण जब प्रति-क्षण
कब तक रुलाओगे
करुण ! कैसे न आओगे ?

विरहिणी सी व्यथित ज्योत्स्ना
करेगी मौन जब टोना
विवश निःश्वास कर देंगे
असम्भव शान्ति से सोना
क्या चैन पाओगे
विकल! कैसे न आओगे?

सजा निज संकुचित सपने
न जाना है जिन्हें जग ने
बिछा जब राह में दूँगी
पलक के पाँवड़े अपने
तुम मुड़ न पाओगे
सरल! कैसे न आओगे?

कोई नहीं, कोई नहीं !

जब प्रथम रश्मि ललाम ने
चुपके उतर पूछा यहाँ
सन्देश जागृति का नवल
जो सुन सके वे हैं कहाँ
सब ओर से उत्तर मिला
कोई नहीं, कोई नहीं !

शृङ्गार कर संध्या सजा
लाई लजीली रात को
पूछा सुने वह कौन जो
मेरी रसीली बात को
सबने जताया सिर हिला
कोई नहीं, कोई नहीं !

शशि खोज जल-थल थक गया
है कौन वह छिपकर कहाँ
इन अश्रु-कण के मोतियों
का मोल जो कर ले यहाँ
सबने कहा हँस खिलखिला
कोई नहीं, कोई नहीं !

[तिहत्तर

रखती सुरक्षित गीत निज
सह यतनाएँ मौन जो
मेरा तराना सीख ले
पूछा यहाँ वह कौन जो
चुप रह गई सुन कोकिला
कोई नहीं, कोई नहीं !

जलता तड़पता भी शलभ
होता न नेक हताश जो
पूछा यहाँ ले कौन जो
मेरे अमर विश्वास को
था उत्तरों का सिलसिला
कोई नहीं, कोई नहीं !

किसान

हैं नितान्त निर्धन किसान ही
भारत जननी के धन।
है इनके ही पुण्य-परिश्रम-
पर निर्भर जग-जीवन।
दे सबको सामान सौख्य का
दुख को गले लगाये।
हैं समाज का बोझ यही तो
रहते सदा उठाये।
इनकी ही तो कठिन कमाई
से धन धान्य नगर हैं।
ये किसान गृहहीन बसाते
कितने सुखमय घर हैं।
इनका ही अविराम विमल श्रम
देता अन्न सभी को।
करते हैं क्या नहीं सत्य ये
श्री-सम्पन्न सभी को।
करते हैं दिन-रात काम ये
हैं पौरुष दिखलाते।
बाधा विघ्न विपत्ति दुःख हैं
झेल सभी कुछ जाते।

सज्जनता शुचिता उदारता
हैं सदैव सरसाते।
कर्मभूमि में पाठ कर्म का
सच्चा यही पढ़ाते।
क्षमा शान्ति करुणा असीम
गुण इनमें भरे पड़े हैं।
केवल एक धर्म के बल ये
रहते सदा खड़े हैं।
करके इनके क्लेश दूर हर
कर इनकी विपदायें।
शक्तिमान धनवान सुशिक्षित
जन जीवन फल पायें।

शुचि स्नेह मिलता है जिसे

शुचि स्नेह मिलता है जिसे
प्रतिपल पिघलने के लिए
निर्माण ही जिसका हुआ
है नित्य जलने के लिए
बुझते हुए उस दीप का
मैं आखिरी विश्वास हूँ।

जो एक दीपक के सिवा
देखा न करता कुछ कहीं
जो प्राण निष्फल दे चुके
है देखता उनको नहीं
घेरे जिसे है वंचना
उस शलभ का विश्वास हूँ।

झाँकी सजाई विश्व ने
जिसके नवल अनुराग की
लूटी नियति ने लालिमा
जिसकी अभागी माँग की
मैं उस विफल शृंगार का
अतिशय करुण उपहास हूँ।

जिसके अलौकिक रूप पर
अलि तड़प काँटों से लड़ा
मुरझा हुआ मुख देखकर
उद्यान जिसका रो पड़ा
खोये हुए उस फूल का
मैं वह क्षणिक सुविकास हूँ।

हूँ नाव मैं जो लग कभी
सकती किनारे है नहीं
आते जहाँ हैं भूल कर
भी चाँद औ तारे नहीं
जिसको चकोर निहारता
सूना वही आकाश हूँ।
जो मौन रह सकता नहीं
टूटा हुआ वहाँ साज हूँ
सुन कान फट जायें जिसे
मैं तो वही आवाज हूँ
खुद नाश जिससे भागता
मैं विपुल सत्यानाश हूँ।

सपने-सा बीत गया जीवन

जागते हुए भी मैं सोया
कैसा था मेरा भोलापन
जब आँख खुली रोकर बोला
अतिशय अकुलाया अपना मन
सपने-सा बीत गया जीवन।

कितनी नव नव आशाओं से
सज्जित सुन्दर अवसर आये
जीवन के ये क्षण कहते अब
जो गये नींद में ठुकराये
सपने-सा बीत गया जीवन।

सुनना था जो कुछ सुना नहीं
कहना था जो कुछ कहा नहीं
सोता था मैं जब जगना था
अब तो वश में कुछ रहा नहीं
सपने-सा बीत गया जीवन।

अँधेरे पथ पर जब अज्ञात

अँधरे पथ पर जब अज्ञात
भटकता देख तुझे लाचार
बन्द करते हों सभी कपाट
न कर तू उनसे दीन पुकार

एक दिन सुन तेरी आवाज
बात यह मेरी निश्चय मान
सभी ये खुल जायेंगे द्वार।

थामकर अपने सर का बोझ
बढ़ा चल आगे तू ललकार
और चलता चल लकुटी टेक
सहन कर विपदाओं की मार

ढो सका यदि तू इसको आज
सामने आकर सदय महान
उतारेगा कोई यह भार।

उठा हो जब भारी तूफान
हृदय हो करता हाहाकार
भवँर में पड़ी और असहाय
नाव हो तेरी यह मझधार

नहीं यदि छोड़ा धैर्य अकाज
अचानक आ कोई अनजान
पकड़ लेगा तेरी पतवार।

कवि ! यह तेरा संसार नहीं

कितनी हँसती कलिकाओं को
कोई है व्यर्थ रुला जाता
अगणित अलियों के सपनों को
सहसा है यहाँ सुला जाता
तू सह सकता यह मार नहीं,
कवि ! यह तेरा संसार नहीं।

जो दीन शलभ लेकर आते
अपनी अविचल अनुरक्ति अमर
है जल मरने का दंड निठुर
हाता प्रदीप उनको सत्वर
प्रिय तुझको अत्याचार नहीं,
कवि ! यह तेरा संसार नहीं।

है वह मयक के पास नहीं
जिसका चकोर यह है याचक
कितनी बरसातें बीत चुकीं
पर प्यासा अब तक है चातक
तू माँग किसी से प्यार नहीं,
कवि ! यह तेरा संसार नहीं।

असहाय यहाँ रहतीं अपूर्ण
कितनी मञ्जुल अभिलाषाएँ
कुचली जाती हैं नित्य नवल
कितनी ही कोमल आशाएँ
तू ढो सकता यह भार नहीं,
कवि ! यह तेरा संसार नहीं।

हम देखने आते नहीं

हैं अमर गति से बह रहे
कहते हुए निर्झर यहाँ
क्या छोड़ हम आगे बढ़े
दोनों किनारों पर कहाँ
हम देखने आते नहीं।

सन्देश सुमनों का सुना
सबको गया विह्वल विहग
दो दिन हँसे अब चल दिये
हम पर हँसा रोया कि जग
हम देखने आते नहीं।

हम जा रहे हैं विश्व से
चल निज निराले ढंग में
अब तुम हमारे चित्र को
चाहे रँगो जिस रंग में
हम देखने आते नहीं।

लगती है बाजी नित्य नई

लगती है बाजी नित्य नई
दुनिया का खेल अनोखा है
हर रोज जीतनेवाला ही
वास्तव में खाता धोखा है

वह व्यर्थ जीत पर इतराता
जिसने है अपने जीवन में
देखी औ जानी हार नहीं।

फूलों में पत्तों-पत्तों में
भरती जब मधुऋतु नवजीवन
कहने में अलि निज प्रेम-कथा
हैं होड़ लगाते पुलकित तन

वह मधुप न कलियों को भाता
जिसने खुलकर जा उपवन में
खाई काँटों की मार नहीं।

आगे बढ़ते जाना ही भर
द्योतक है नहीं सफलता का
हम मूल्य नहीं कर पाते हैं
जीवन की क्षणिक विफलता का

मंजिल तक पहुँच न वह पाता
जो हुआ कभी पथ पावन में
चलते-चलते लाचार नहीं।

खेलते हुए मृदु लहरों से
बहना तो है आसान कहीं
पर वह नाविक क्या नाविक है
जिसने देखा तूफान नहीं

है डूब-डूबकर उतराई
क्षण में नीचे, ऊपर क्षण में
जिसकी किस्मत मझधार नहीं।

मेरे लिए, मेरे लिए

है साँझ आज उदास-सी
है भर रही निःश्वास-सी
है तारकों ने अश्रुकण बिखरा दिये उद्विग्न मन
मेरे लिए, मेरे लिए।

कल ही खिली थी जो कली
लगती सभी को थी भली
निज अतुल वैभव को लुटा मुरझा गई असमय चली
मेरे लिए, मेरे लिए।

सुन कुहकिनी मेरी व्यथा
की करुणतम कातर कथा
आकुल अकेली आम्र-तरु पर आ अचानक रो पड़ी
मेरे लिए, मेरे लिए।

हैं ये सभी दुर्बल हृदय
मत भूल बन जाना सदय
छोटा न करना जी कभी देना नहीं दो बूँद भी
मेरे लिए, मेरे लिए।

सुख में मतवाला क्या जाने

दुख दर्द न है जिसने देखा
सुख में ही है जो दीवाना
जो जान नहीं पाया अब तक
क्यों जल-जल मरता परवाना
वह उर की ज्वाला क्या जाने !

आँसू से सींचा करता नित
फिर भी न हृदय जिसका खिलता
दिन-रात विकल उस बेवस को
रोने में कौन मजा मिलता
यह हँसनेवाला क्या जाने !

भर-भर प्याले पीता था जो
जब तक मधु का मृदु स्रोत बहा
पर विष की अन्तिम घूँटों को
पीने से जो मजबूर रहा
क्या है मधुशाला क्या जाने !

होता अच्छा अंजाम नहीं

बुझते दीपक ने आह भरी
सुनकर कहना परवाने का
लो आँख खोलकर देख सभी
दिल लेकर उसे जलाने का
होता अच्छा अञ्जाम नहीं।

कर चाँद यत्न हारा नभ में
अपना मुँह कहीं छिपाने का
लख कान्तिहीन उसको चकोर
बोला जब, नित तरसाने का
होता अच्छा अञ्जाम नहीं।

मुरझाई कलिका ने समझा
मतलब जब अलि के गाने का
काँटे सी चुभ यह बात गई
काँटों में ला तड़पाने का
होता अच्छा अञ्जाम नहीं।

रोने दो मुझको आजीवन
लो नाम न तुम पछताने का
पर सोच यही मैं घबराता
बेबस को व्यर्थ रुलाने का
होता अच्छा अञ्जाम नहीं।

कुछ भी कहूँ, कुछ भी करूँ

कुछ भी कहूँ, कुछ भी करूँ
कुछ काम तो आता नहीं।
जो पुण्य है उसके लिए
मेरे लिए वह पाप है
वरदान जो उसको हुआ
मुझको वही अभिशाप है
पथ कौन लूँ किससे डरूँ
जाना कभी जाता नहीं।
वे चैन से सोते नहीं
जग जानता जिनको सुखी
माँगूँ किसी से शान्ति क्या
खुद दीखते हैं सब दुखी
त्यागूँ किसे किसको वरूँ
कोई मुझे भाता नहीं।
सब भाँति मैं जिनका हुआ
मुझको न हैं वे जानते
कल तक हमारे जो रहे
वे हैं न अब पहचानते
मैं हाथ ही किसका धरूँ
स्थिर एक भी नाता नहीं।
सिद्धान्त नित होते नये
प्रतिदिन बदलती है प्रगति
कल तक सुमति थी मान्य जो
है आज वह कोरी कुमति
किस पर जिऊँ किस पर मरूँ
है भाग्य बतलाता नहीं।

हैं इन राखों की ढेरी में

मेरे कितने अभिलाष छिपे
कितने उर के विश्वास छिपे
जग आज रो रहा है जिन पर
मेरे अन्तिम निःश्वास छिपे
हैं इन राखों की ढेरी में।

लड़ता था जिनको पाने को
कितने अपने अधिकार छिपे
हैं छिपी हुईं कितनी भूलें
कितने ही स्वप्न असार छिपे
हैं इन राखों की ढेरी में।

इतराया जिन पर आजीवन
अगणित अपने अभिमान छिपे
इनपर प्रतिदिन जग से मुझको
जो मिले मान-अपमान छिपे
हैं इन राखों की ढेरी में।

इनको मत बिखरा दो इनमें
हों रत्न नहीं अनजान छिपे
इनको संचित कर लो इनमें
हों नहीं स्वयं भगवान् छिपे
हैं इन राखों की ढेरी में

देखा

इस रंगमंच पर कितनों
को आते-जाते देखा।
कितनों को रोते देखा
कितनों को गाते देखा।
हँसते-हँसते जो आये
आँसू बरसाते देखा।
दानी को अपना सूना
आँचल फैलाते देखा।
यौवन की मादक हाला
तन्मय मन पीते देखा।
लेकिन उनके भी मधुमय
प्यालों को रीते देखा।
उठ-उठकर फिर-फिर मैंने
गिरनेवालों को देखा।
गिरने के बदले हँस-हँस
मरनेवालों को देखा।
देखा जलनेवालों को
ठंडी विभूति बन जाते।
प्रेमी विह्वलता को
आँसू में आ छन जाते।
शिशु का भोलापन देखा
अभिमान अमित यौवन का।
सौन्दर्य-सिन्धु में देखा
बहता बेड़ा जीवन का।

चिर तृप्ति अनोखी देखी
सन्तुष्ट जनों का जीवन।
देखी अतृप्ति की ज्वाला
तीखी तृष्णा को तड़पन।

बन बन लाखों को सहसा
निरुपाय बिगड़ते देखा।
भूले-भटकों को फिर से
निज राह पकड़ते देखा।

देखीं सबकी इच्छाएँ
सबके जीवन की माया।
आश्चर्य अभी तक मैंने
अपने को देख न पाया।

पल भर जाने दो भूल आज

सीमा के नियमों के वितान
जीवन की विह्वलता महान्
पग-पग पर पैर पकड़ने को
उत्सुक निष्फल आत्माभिमान
पल भर जाने दो भूल आज।

भावी की अति भीषण पुकार
बीते अतीत का सब खुमार
इस संशयालु उर के रह-रह
उठनेवाले कातर विचार
पल भर जाने दो भूल आज।

जग के निष्ठुर उपहास हास
गम्भीर ज्ञान के जटिल पाश
प्रत्येक पुलक पर जीवन की
निष्फलता का क्रन्दन हताश
पल भर जाने दो भूल आज।

कहते सब जिसको लोक-लाज
कल और और कुछ और आज
हरदम लकीर ही का फकीर
अपनी धुन में पागल समाज
पल भर जाने दो भूल आज।

इस उर-तन्त्री से भिन्न तान
अपने स्वर से बेसुरे गान
हम पर जो आँख उठाते हैं
उनकी नीरस आँखें अजान
पल भर जाने दो भूल आज।

हैं ये ही कवि के करुण गान

दीपक की वह अन्तिम उसाँस
मधुपों का मृदु गुञ्जन उदास
मिटने का निठुर नियम लेकर
कलियों का पल भर का विकास
हैं ये ही कवि के करुण गान।

चातक की वह प्यासी पुकार
पागल प्रेमी की जीत-हार
उन्मत्त प्रणय की निष्फलता
का यौवन पर छाया खुमार
हैं ये ही कवि के करुण गान।

उर के घावों का आर्त्तनाद
कुचले से भावों का विषाद
जीवन की अविरल भूलों पर
जग का निष्ठुर वादाविवाद
हैं ये ही कवि के करुण गान।

धनहीन जनों की भूख-प्यास
परवशता के निष्फल प्रयास
शृङ्खलाबद्ध इस जीवन के
अव्यक्त व्यथित उर के हुलास
हैं ये ही कवि के करुण गान।

न रोके रुक सकता उद्‌गार

न सह सकती अपनी ही मंजु
कली जब कोमलता का भार
लुटाती भ्रमरों पर निरुपाय
सरसता सुन्दरता का सार
न रोके रुक सकता उद्‌गार।

विलखता लख के दीन चकोर
लाजवश है शशि ढँकता गात
बिखर जाती पर जी की साध
अश्रु की बूँदें बनकर प्रात
न रोके रुक सकता उद्‌गार।

विवश शलभों को देख प्रदीप
छिपाता है अपना अनुराग
जला देती उसको ही किन्तु
धधककर सहसा उर की आग
न रोके रुक सकता उद्‌गार।

बनाकर बादल काला रूप
कड़ककर करते हैं उपहास
नाच पड़ते जब मंजु मयूर
उमड़ बह चलता है उल्लास
न रोके रुक सकता उद्‌गार।

खड़ा निज निर्ममता पर शैल
किया करता था जो अभिमान
बज्र-सा उसका भी उर चीर
उमड़ निकले निर्झर अनजान
न रोके रुक सकता उद्‌गार।

हृदय जब कर कर लाखों यत्न
छिपा लेता है अपना प्यार
निकल पड़ता है वह चुपचाप
खोलकर मृदु नयनों के द्वार
न रोके रुक सकता उद्‌गार।

जब

दुनिया जब रँग जायेगी
मेरे विषाद के रँग में।
रँग जाना ही होगा तब
तुमको भी सबके रँग में।

जग गूँज उठेगा जब इन
मेरी विह्वल तानों से।
तुम स्वयं हटा लोगे तब
उँगली अपने कानों से।

देखेंगे सभी तड़पना
होकर सचेत मेरा जब।
मूँदे नयनों को रखना
सम्भव न तुम्हें होगा तब।

भर जायेगा जग का उर
मेरी जब उच्छ्वासों से।
बच नहीं सकोगे तब तुम
उनकी सकरुण पाशों से।

प्रज्वलित विश्व होगा जब
मेरे नैराश्य अनल से।
उसकी प्रचण्ड ज्वाला में
तुम रह न सकोगे कल से।

देंगे जब डुबो जगत को
आँसू के प्रबल पनारे
क्या देख सकोगे सुख से
कौतुक तुम खड़े किनारे।

होगा जब द्रवित दया से
मेरे दुख से जग का मन।
रह नहीं सकोगे तब तुम
षाषाण-हृदय निष्ठुर बन।
जब मेरी व्यथा करेगी
जग में कराल कोलाहल।
मेरी सुध किया करेगी
तुमको सदैव ही विह्वल।
मेरी आहों के बादल
जब नाद करेंगे दुख से।
तुम ओढ़ शान्ति की चादर
सो नहीं सकोगे सुख से।

ध्यान था मुझको नहीं

ध्यान था मुझको नहीं, दो
दिवस का मधुमास था वह।
नाश लाने के लिए ही
सुलभ पूर्ण विकाश था वह।
था न सोचा स्वप्न-सी हो
जायँगी वे शीघ्र बातें।
स्वर्णमय वे सुखद दिन औ
वे रसीली रजत रातें।
जान पाया था नहीं मैं
पतन था उत्थान मेरा।
अन्त होने को रुदन में
उमड़ता था गान मेरा।
जब चमकता ताज सा था
भाग्य का मेरे सितारा।
मैं समझ पाया नहीं वह
था लुटेरों को इशारा।
था अलौकिक दिव्य इतना
ज्योतिमय सुन्दर सबेरा।
कल्पना में भी न आया
आज का अविरल अँधेरा।

भूल जाऊँगा तुम्हें मैं

मैं लगा लूँगा कभी मन
उमड़ती श्यामल घटा में
कलित कुसुमों में कभी औ'
मञ्जु कलियों की छटा में
भूल जाऊँगा तुम्हें मैं।

शैल-शिखरों पर कभी तो
विजन वन में फिर मुदित मन
विवश बहलाया करूँगा
मैं व्यथित निज विकल यौवन
भूल जाऊँगा तुम्हें मैं।

सान्त्वना दूँगा हृदय को
शलभ थी विह्वल व्यथा से
फिर मना लूँगा इसे मैं
तड़पते अलि की कथा से
भूल जाऊँगा तुम्हें मैं।

जटिल जीवन की अपरिमित
नित्य की जय औ' अजय में
पतन औ उत्थान के इन
निठुर नियमों की प्रलय में
भूल जाऊँगा तुम्हें मैं।

मैं डुबो दूँगा तुम्हारी
स्मृति मधुर मधु की लहर में
स्वप्न के सुन्दर सदन में
कल्पना के मृदुल कर में
भूल जाऊँगा तुम्हें मैं।

तोड़ पाया कौन अब तक
भूल जाने के नियम को
भूल यदि यों भी न पाया
भूल जाऊँगा स्वयं को
भूल जाऊँगा तुम्हें मैं।

उषा

पूछो मत मैं क्या ले आई।
शशि के उर का पागल प्रमाद
तारावलि का विह्वल विषाद
मैं जग पर बिखराने आई
पूछो मत मैं क्या ले आई।

कोमल कलियों को जग रञ्जन
मधुप्रिय मधुपों को मृदु गुञ्जन
मैं सुखमय सिखलाने आई
पूछो मत मैं क्या ले आई।

कल कैद कञ्ज ने किया जिसे
था छिपा हृदय ने लिया जिसे
मैं अलि को छुड़वाने आई
पूछो मत मैं क्या ले आई।

मूठी भर चाँदी में ही जग
था मृदु मयङ्क ने रक्खा ठग
मैं सोना बरसाने आई
पूछो मत मैं क्या ले आई।

इन सुप्त दृगों पर इन्द्रजाल
रचते थे जो अपना विशाल
वे सपने सुलझाने आई
पूछो मत मैं क्या ले आई।

थी रात कटी जिनकी रो-रो
दुलराकर दिया सुला उनको
सोतों को उकसाने आई
पूछो मत मैं क्या ले आई।

मृदु आशाओं से भरकर उर
वह जाग्रति का सन्देश मधुर
हूँ सबको बतलाने आई
पूछो मत मैं क्या ले आई।

तसवीर

होती कदापि है मुझसे
जो नहीं जरा भी न्यारी।
तुमसे भी बढ़कर मुझको
प्रिय है तसवीर तुम्हारी॥

सुनती सदैव है अविचल
सब कुछ जो मैं कहता हूँ।
है दया द्रवित सी होती
जब मैं रोता रहता हूँ॥

नीरव अस्फुट अधरों से
है समवेदना दिखाती।
निस्पन्द सरस नयनों से
है करुणा-सी बरसाती॥

अनिमेष दृगों से प्रतिपल
है मुझको देखा करती।
मेरी स्वप्निल इच्छाएँ
फिर से है उर में भरती॥

है सतत सङ्गिनी मेरी
इस दुखमय सूनेपन में।
भरती सामर्थ्य सदा है
मेरे मृदु उन्मन मन में॥

इसमें कितनी करुणा है
इसमें कितनी आशा है।
साकार हृदय की इसमें
मेरी चिर अभिलाषा है॥

जब मृदुल कल्पना मेरी
इसको सजीव करती है।
मेरे जर्जर जीवन में
यह नव जीवन भरती है॥

पीड़ा मेरी जब इसको
लेती है लगा हृदय से।
रो उठती है यह भी उस
निष्फलता के अभिनय से॥

मेरे मृदु स्वप्न जगाते

मेरे मृदु स्वप्न जगाते
हो सम्मुख जब तुम आते।
मैं समझ नहीं कुछ पाता
क्या है मुझको हो जाता
है जादू सा छा जाता
सब धीरज है खो जाता।
पुलकित मन प्राण बनाते
हो सम्मुख जब तुम आते।
मैं हूँ मन को समझाता
पर वह है नहीं सँभलता
है रोम-रोम से सहसा
पीड़ा-प्रवाह बह चलता।
सुषमा का स्रोत बहाते
हो सम्मुख जब तुम आते।
अपनी उस विह्वलता को
हैं प्राण सदैव छिपाते
पर नयन न जाने तुमसे
चुपके से क्या कह जाते।
अतुलित उमङ्ग उपजाते
हो सम्मुख जब तुम आते।

हूँ मैं आहों को रखता
लज्जा से बाँध जकड़कर
वे निकल-निकल पड़ते हैं
आँधी से उमड़-उमड़कर।
सौन्दर्य - सुधा सरसाते
हो सम्मुख जब तुम आते।

चिर सुप्त व्यथाएँ फिर हैं
उर में लहराने लगतीं
हैं मरी हुई आशाएँ
फिर पंख डुलाने लगतीं।

दो दिन का यह वैभव है

दो दिन का यह वैभव है, दो दिन की यह लाली है।
गाती मेरे जीवन की गाथा यह मतवाली है॥

कलियों पर जाकर प्रतिदिन
मधुकर मत मँडराया कर।
हो मस्त देख मेघों को
तू मोर न इतराया कर॥
जल-जल पतंग पर दीपक
हसरत न मिटा दे अपनी।
सपनों के पीछे प्रणयी
रातें न लुटा दे अपनी॥

दो दिन का यह वैभव है, दो दिन की यह लाली है।
गाती मेरे जीवन की गाथा यह मतवाली है॥

पागल सी चपल तरङ्गो,
नाचो मत उछल-उछलकर।
है चाँद तुम्हें ललचाता
नाहक ही निकल-निकलकर॥
फूलो मत फूल वृथा ही
अपने इस लघु जीवन पर।
संसार चकित है सारा
इस अनुपम भोलेपन पर॥

दो दिन का यह वैभव है, दो दिन की यह लाली है।
गाती मेरे जीवन की गाथा यह मतवाली है॥

इस छोटे से जीवन की

इस छोटे-से जीवन की
सीमित लघुता को देखो,
तज अपनेपन की माया
जग की गुरुता को देखो।
हैं काम नहीं कुछ आते
बल, बुद्धि, परिश्रम, वैभव,
विधि के विधान के आगे
हैं छिन्न-भिन्न होते सब।
अभिमान व्यर्थ जीवन के
यश अपयश हैं आडम्बर,
बल, रूप, मान, यौवन, धन,
पल भर में हैं जाते झर।
माना थोड़ा है तुमको
सान्त्वना कभी मिल जाती,
थोड़े दिन तक श्रमबल से
है रङ्ग-भूमि हिल जाती।
पर पटाक्षेप होते ही
फिर है क्या कुछ रह जाता?
केवल जग का भ्रम अच्छा
या बुरा तुम्हें कह जाता।

मधुर-स्मृति, अब तुम न आना

जब प्रथम बरसात के दिन
साज हो नूतन निराला
सुखद रिमझिम पवन शीतल
गगन में शुचि मेघ-माला—
हृदय को मेरे रुलाने तुम न आना,
मधुर-स्मृति, अब तुम न आना।

विमल विकसित कलित कलिका
झूम निज छवि पे निराली
विहँस हँस जब दे मधुप को
प्रेम की पीयूष-प्याली—
वेदना मेरी बुलाने तुम न आना,
मधुर-स्मृति, अब तुम न आना।

वसन वासन्ती पहन प्रिय
परम प्रमुदित मृदुल उपवन
हो बुलाता जब मुझे निज
सुरभि-कर फैला मुदित-मन
आग तब उर में लगाने तुम न आना,
मधुर स्मृति, अब तुम न आना।

मोद-मदमाता विजन में
गा रहा हो जब निरन्तर
नाचती आकर मयूरी
दे प्रणय संवाद सुन्दर
आह तब मुझको सताने तुम न आना,
मधुर-स्मृति, अब तुम न आना।

संकुचित-सी कुछ चकित-सी
भ्रमित ऊषा मौन आकर
दे मुझे जब सुखद-स्वप्नों
का अनोखा साज लाकर
नींद से मुझको जगाने तुम न आना,
मधुर-स्मृति, अब तुम न आना।

बालकों-सा भूल जग जब
हृदय मेरा खेलता हो
मोदयुत अभिनय अलौकिक
एक अपना देखता हो
व्यथित तब मन को बनाने तुम न आना,
मधुर-स्मृति, अब तुम न आना।

पुण्य-स्मृति अब भूलकर भी
तुम न आना पास मेरे
गिर चुका हूँ बहुत अब हूँ
मैं न योग्य कदापि तेरे
हृदय को मेरे लजाने तुम न आना,
मधुर-स्मृति, अब तुम न आना।

जब समय प्रस्थान का
मेरे यहाँ से पास होवे
शून्य जग हो शून्यता का
हृदय मेरा ग्रास होवे
तड़ित सी मुझको छकाने तुम न आना,
मधुर-स्मृति, अब तुम न आना।

है उन स्वप्नों की छाया

है उन स्वप्नों की छाया
अब भी उर में छा जाती।
सुधि एक कसक सी उठकर
है कभी-कभी आ जाती।
है बीते विकल क्षणों की
स्मृति जीवन विकल बनाती।
है कभी-कभी उरतन्त्री
अब भी वह राग बजाती।
मादकता चली गई है
अब भी खुमार है बाकी।
नयनों के सम्मुख सहसा
आ जाती है वह झाँकी।
बुझ गई ज्योति जीवन की
है अन्धकार सा छाया।
पर कुछ प्रकाश सा अब भी
दिखला जाती है माया।
हैं छोड़ गईं मुझको सब
वे मतवाली आशाएँ।
पर उकसा जाती हैं उर
अब भी मृदु अभिलाषाएँ।
जर्जर जीवन में उठता
है तड़प कभी नव जीवन।
चेतनाहीन कर देता
है कभी-कभी पागलपन।

है बँधा परिस्थितियों से

है बँधा परिस्थितियों से
मेरा विषादमय जीवन।
चलने है कभी न पाता
वांछित पथ पर उन्मन मन॥
हैं निठुर सत्य से टकरा
मिटतीं मञ्जुल आशाएँ।
उल्लास-सुमन को मुरझा
जाती हैं विपुल व्यथाएँ॥
हँसने है मुझे न देता
जीवन का अविरल क्रन्दन।
सोने निर्विघ्न न देता
स्वप्नों का मधुमय गुञ्जन॥
मृदु मन को कहीं जगत का
परिहास टोक जाता है।
सीमा का अकरुण शासन
फिर मुझे रोक जाता है॥
सुख का प्रवाह अनियन्त्रित
उर में जब बह जाता है।
कर्त्तव्य तभी कुछ मुझसे
चुपके से कह जाता है॥
है मुझे डुबो देता जब
मेरा सुखमय पागलपन।
है चुटकी-सी ले जाती
चेतना निपट निष्ठुर बन॥

ऐसी अँधेरी रात में

है दीप आशा का बुझा
है कल्पना गतिहीन-सी,
पथ जोहती हूँ किन्तु मैं
अब भी विवेक विहीन-सी,
ऐसी अँधेरी रात में।

है सो रहा संसार सब
सारी सुला अपनी व्यथा,
कोई न सुनता किन्तु मैं
हूँ कह रही अपनी कथा,
ऐसी अँधेरी रात में।

है जो घनों से भेजता
सन्देश मुझको मौन सा,
जो है जगा मुझको रहा
वह एक तारा कौन सा,
ऐसी अँधेरी रात में।

सभी के तो दिन फिरते हैं

व्यथित ग्रीष्मातप से यद्यपि
शिखी है नेक न कलपाता
किन्तु घन फिर से घिरते हैं
वही सावन है फिर आता
सभी के तो दिन फिरते हैं।

गिरी कलियों को भ्रमरावलि
देख भू पर है अकुलाती
सदयता किन्तु किसी की फिर
गोद डाली की भर जाती
सभी के तो दिन फिरते हैं।

चला जाता है पतझड़ भी
नई रङ्गत है फिर आती
कूक उठती फिर ज्यों कोयल
लुटी दौलत अपनी पाती
सभी के तो दिन फिरते हैं।

तड़पते प्राण सदा आकुल
नहीं ये चैन कभी लेते
थके विश्वास न जो अपने
मुझे यह आश्वासन देते
सभी के तो दिन फिरते हैं।

कैसा प्रभात है आया

खिलने में आज न जाने क्यों
है सरसिज दल शरमाया
अलसाई आँखों के सम्मुख
है और अँधेरा छाया
कैसा प्रभात है आया ?

चलता समीर भी कुछ जैसे
खोया-खोया भरमाया
उल्लास भरी निज लहरों को
सरिता ने शीघ्र सुलाया
कैसा प्रभात है आया ?

भूला सा निज स्वर्गिक स्वर को
बैठा विहंग अकुलाया
है प्रथम रश्मि ने आज उसे
कैसा सन्देश सुनाया
कैसा प्रभात है आया ?

मध्यान्ह काल है अब जग में
देखना कि क्या ले आता
बस यही सोचकर है अपना
उर आज विकल हो जाता
कैसा प्रभात है आया ?

मुझे पत्थर पिघलाना है

न सुनकर भी जो सुनते हैं
उन्हीं के सम्मुख गाना है
देखते हुए बने अन्धे
उन्हीं को दिल दिखलाना है
मुझे पत्थर पिघलाना है।

समझकर जो न समझते हैं,
उन्हीं को तो समझाना है
लगाई आग जिन्होंने है
उन्हीं को इसे बुझाना है
मुझे पत्थर पिघलाना है।

फटकने जो न मुझे देते
उन्हीं के ही ढिग जाना है
भागते रहते जो मुझसे
उन्हीं को तो अपनाना है
मुझे पत्थर पिघलाना है।

जानता हूँ लेकिन इतना
व्यर्थ यह सभी बहाना है
एक दिन तो उनको मुझमें
मुझे उनमें मिल जाना है
मुझे पत्थर पिघलाना है।

मत इतना मुझे उठाओ

निज क्षणिक सफलता से मैं
इतना मदान्ध हो जाऊँ
गिर सकता हूँ मैं फिर से
यह नहीं सोच तक पाऊँ
मत इतना मुझे उठाओ।

मेरी उन्नति से दुनिया
इतनी आकुल हो जाये
नित मुझे गिराने की ही
वह अपनी घात लगाये
मत इतना मुझे उठाओ।

रह गये किसी कारण जो
हैं मुझसे पीछे पथ पर
उनके प्रति भाव घृणा के
जागृत हों मुझमें कातर
मत इतना मुझे उठाओ।

सन्तुष्ट हृदय हो इतना
आगे पग नहीं बढ़ाऊँ
अपनेपन में पागल हो
मैं भूल तुम्हीं को जाऊँ
मत इतना मुझे उठाओ।

बना मैं एक तमाशा हूँ

हिले कब पाँव युगल अपने,
रहा कब पीछे मैं किससे,
पथिक हूँ सब सा मैं भी किन्तु
सभी हँसते मुझे पर इससे,
बना मैं एक तमाशा हूँ।

सुनाते-सुनते ही पथ पर,
सभी हैं रहते जिस तिससे,
बात अपनी लेकिन हूँ मैं,
नहीं कहता चलता इससे,
बना मैं एक तमाशा हूँ।

बताता मार्ग वही उसको,
पूछता है जो भी जिससे,
किन्तु ज्यों सूझ मुझे पड़ता,
चला करता त्यों ही इससे,
बना मैं एक तमाशा हूँ।

लिखा क्या किसकी किस्मत में

लिखा क्या किसकी किस्मत में
किसी ने कब यह जाना है ?

डूबती नाव पहुँच तट तक
लहर का कौन ठिकाना है,
अधर तक आकर हाथों से
छूट जाता पैमाना है,
लिखा क्या किसकी किस्मत में
किसी ने कब यह जाना है ?

पहुँच कलिका के ढिग सहसा
तड़पता अलि दीवाना है,
दीप के चरणों तक जाकर
जला करता परवाना है,
लिखा क्या किसकी किस्मत में
किसी ने कब यह जाना है ?

बता यह कौन भला सकता
कहाँ कब धोखा खाना है,
अचानक हाथ हिला करता
न लगता ठीक निशाना है,
लिखा क्या किसकी किस्मत में
किसी ने कब यह जाना है ?

उठाना कभी गिराना फिर
हमें बेबस भरमाना है,
अटल है केवल इतना ही
यहाँ आकर मर जाना है,
लिखा क्या किसकी किस्मत में
किसी ने कब यह जाना है ?

लुट गया जिसने लुटाया

विहँस हँस कोमल कली ने
प्रेम के प्याले पिलाया
रह गई मधु भी नहीं औ
मधुप भी फिर से न आया।
लुट गया जिसने लुटाया।

मुग्ध शशि ने युग करों से
रात भर चाँदी लुटाया
किन्तु होते ही सबेरा
वह किसी को भी न भाया।
लुट गया जिसने लुटाया।

चार दिन ऋतुराज ने जी
खोल कर ऊधम मचाया
चुक चला वैभव सभी जब
धूल तब जग ने उड़ाया।
लुट गया जिसने लुटाया।